सितंबर-2024, अंक-16

प्रतिमुद्रण

प्रतिभूति उत्पादों के अग्रणी निर्माता

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Limited

मिनीरत्न श्रेणी-I, सीपीएसई/A Miniratna Catagory-I, CPSE
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन/ Wholly Owned by Govt. of India)
16वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi-110001

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक

को **वर्ष 2022-23** के दौरान

समग्र श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए

19वें एसपीएमसीआईएल स्थापना दिवस

के अवसर पर

अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक कप

भेंट किया गया है।

India Security Press, Nashik

is awarded with

CMD Cup

for **Overall Outstanding Performance**

during the **Year 2022-23** on the occasion of

19th SPMCIL Foundation Day.

एस.के. सिन्हा
S.K. Sinha
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)

विजय रंजन सिंह
Vijay Ranjan Singh
अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक
Chairman and Managing Director

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नासिक
उत्कृष्ट राजभाषा
कार्यान्वयन पुरस्कार
वर्ष 2023-2024
सार्वजनिक उपक्रम कार्यालय
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय
नासिक रोड़
द्वितीय पुरस्कार
समन्वयन कार्यालय
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, वायुयान विनिर्माण प्रभाग, ओझर, नासिक

अनुक्रमणिका

अंक–16

सितंबर, 2024

राजभाषा पत्रिका

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय

(एसपीएमसीआईएल की इकाई)

नासिक रोड-422101

संरक्षक

श्री राजेश बंसल

मुख्य महाप्रबंधक

सह संरक्षक

श्री डी. के. डेका

अपर महाप्रबंधक (सामग्री)

*** प्रधान संपादक ***

श्री अर्पित धवन

उप महाप्रबंधक एवं विभाग प्रमुख

(मा.सं.)

*** संपादक ***

श्री लोकनाथ तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा)

*** संपादन सहयोग ***

श्री एस. एस. निकुंब

वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

हिंदी कक्ष

संदेश		पृ.सं.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश		02
निदेशक (मा.सं.) का संदेश		03
निदेशक (वित्त) का संदेश		04
मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश		05
संरक्षक की कलम से		06-07
संपादकीय		08
रचनाएं	**रचनाकार**	**पृ.सं.**
किसी संगठन में वित्त विभाग की भूमिका	गुंजन सिंगला	09-10
मिस्ड कॉल प्राप्त हुई और पैसा गया...	रुद्र प्रताप सिंह	11
हाईटेक युग के लिए उपयोगी नियोडिमियम	सचिन सोनी	12-13
सरकारी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का भविष्य	संजय गिरी	14-15
शुरूआत	लोकनाथ तिवारी	15
व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन	नवदीप कुमार शर्मा	16-18
मुझे नई एक दुनियाँ मिली	उमाकांत पंडित	18
कुप्पाली वेंकटप्पा गौड़ा पुटप्पा कुवेम्पु	एस. एस. निकुंब	19-21
गोबरैला	अभिषेक राय	21
शून्य प्रतिशत कचरा - एक संकल्पना	अमोल गवारी	22-24
नजरिया बदलो, जिंदगी बदल जायेगी	अशोक अरुण डे	25-26
निष्पक्ष चुनाव	रवि आसुदानी	26
भारतीय लोकतंत्र की रीढ़	दिनेश राजेंद्र वाजपेयी	27
बड़े भाई साहब (कहानी)	- मुंशी प्रेमचंद	28-33
नारी शक्ति का जागरण	दिलीप जायभाये	33
गतिविधियाँ		34-44

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं।
भा.प्र.मु. प्रबंधन और संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विजय रंजन सिंह
VIJAY RANJAN SINGH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश.....

हिंदी दिवस-2024 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

मुझे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हुई है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 16वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है। इसके लिए मैं मुख्य महाप्रबंधक और संपादकीय टीम को बधाई देता हूँ।

हिंदी को राजभाषा बनाने और उसे संवैधानिक दर्जा देने के पीछे हमारे संविधान निर्माताओं की दूर दृष्टि रही है। एक लोक सेवक होने के नाते हमें जनभाषा अर्थात हिंदी में अनिवार्य रुप से कार्य करना चाहिए। इन्हीं प्रसंगों के कारण राजभाषा हिंदी के प्रति हम अपनी नैतिक और संवैधानिक जिम्मेदारी का निर्वहन कर पाएंगे।

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हो रहा है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक राजभाषा के अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन बहुत ही सुंदर तरीके से कर रही है और नराकास, नासिक में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रही है। मुझे यह जानकार भी बहुत प्रसन्नता हुई है कि नराकास, नासिक द्वारा आईएसपी को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2022-2023 का प्रोत्साहन पुरस्कार 26 जून, 2024 को प्रदान किया गया।

आशा है यह सिलसिला और भी बेहतर होगा और इकाई का नाम राजभाषा सहित अन्य क्षेत्रों में भी रौशन होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(विजय रंजन सिंह)

सुनील कुमार सिन्हा
SUNIL KUMAR SINHA
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश.....

हिंदी दिवस, 2024 की आप सब को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

यह बहुत आनंद का विषय है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक द्वारा राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 16वें अंक का प्रकाशन शीघ्र किया जाना है। इसके लिए आईएसपी प्रबंधन और संपादकीय टीम साधुवाद की पात्र है।

आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में प्रत्येक मनुष्य और संस्थान अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की कोशिश में हैं ताकि बदलते सामाजिक- सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कहीं गुम न हो जाएँ। मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि आईएसपी, नासिक ने अपने स्थापना से पिछले 99 वर्षों की सफल यात्रा की है और इस दौरान कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

वर्तमान में आईएसपी, नासिक एसपीएमसीआईएल के 'विजन' और 'मिशन' के अनुरूप कार्य योजना बनाते हुए उसे प्रासंगिक तरीके से क्रियान्वित कर रही है। साथ ही नए-नए विचारों के साथ अपनी जागरुकता के माध्यम से उत्पादों को बेहतर रूप में एवं उचित समय पर उत्पादित करने की कार्य योजना के साथ कंपनी के विकास को नई गति और दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते कदमों के साथ ताल से ताल मिलाते हुए कंपनी की जनशक्ति को बदलते समय के साथ प्रशिक्षित करते हुए सेवा में उनकी प्रासंगिकता बनाए रखना भी अपने-आपमें एक बड़ी चुनौती है।

मुझे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हो रही है कि आईएसपी, नासिक प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी शानदार कार्य कर रही है। फलस्वरुप आईएसपी भविष्य की सभी चुनौतियों से लड़ने और उस पर विजय पाने में पूर्णतः सक्षम है। मेरी आशा है की इकाई अपने प्रगति पथ पर नित्य-नवीन ऊर्जा से अपेक्षित सफलता प्राप्त करती रहे।

शुभकामनाओं सहित,

(सुनील कुमार सिन्हा)

अजय अग्रवाल
AJAY AGARWAL
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश.....

हिंदी दिवस, 2024 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक की राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

एसपीएमसीआईएल निगम मुख्यालय एवं इकाई स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन बहुत ही उम्दा तरीके से किया जा रहा है। इस प्रकार हम आस्था के साधनों के निर्माता होने के साथ-साथ अपने संवैधानिक कर्तव्यों एवं नैतिक दायित्वों दोनों को बेहतर तरीके से निभा रहे हैं।

मुझे यह सूचना प्राप्त हुई है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नासिक से वित्त वर्ष 2022-2023 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उपक्रम श्रेणी में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त आईएसपी को 'गुणवत्ता प्रबंधन और नेतृत्व उत्कृष्टता के लिए ग्लोबल अवार्ड' का प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि किसी भी संस्थान के लिए गर्व का विषय है। इसके लिए आईएसपी, नासिक के सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष होता है कि आईएसपी न केवल उत्पादन बल्कि राजभाषा, संरक्षा, सुरक्षा, गुणवत्ता, लागत, मुनाफा आदि के क्षेत्र में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है और एसपीएमसीआईएल की एक गौरवशाली इकाई के रुप में जानी जाती है।

मैं आशा करता हूँ कि विभिन्न क्षेत्रों में आईएसपी की सफलता की निरंतरता भविष्य में भी बनी रहे और हम राजभाषा पत्रिका के माध्यम से अपनी रचनात्मकता की खुशबू बिखेरते रहें।

शुभकामनाओं सहित।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)

विनय कुमार सिंह, *भा.रा.से.*
VINAY K. SINGH, *I.R.S.*
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश.....

हिंदी दिवस, 2024 के अवसर पर भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक द्वारा राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 16वें संस्करण का प्रकाशन करने पर इकाई के सभी अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों को बधाई और शुभकामनाएँ।

सतर्कता जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारत प्रतिभूति मुद्रणालय जैसी संवेदनशील इकाई में एक कर्मचारी के रुप में आपको अधिक सतर्क रहते हुए अपने कार्यों को किया जाना अपेक्षित है क्योंकि सतर्क और सक्षम जानकार कर्मचारी किसी भी संगठन के उज्जवल भविष्य का आधार होता है। मुझे यह जानकार प्रसन्नता है कि आई. एस. पी. के कर्मचारी इस अपेक्षा पर खरे उतरते हैं।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट कार्य की सूचना प्राप्त होती है जो इकाई के कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी के विस्तार को देखते हुए यह कहना समीचीन है कि हिंदी अब बाजार और व्यापार की भाषा बन गई है और वैश्विक परिदृश्य पर अपनी उपस्थिति दर्ज करने में सक्षम है।

मुझे प्रसन्नता है कि गृह पत्रिका में सभी विभागों के कर्मचारियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी दिखाई है। इसके लिए मैं, संपादक मण्डल, रचनाकारों और इस पत्रिका को तैयार करने में योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

(विनय कुमार सिंह)

राजेश बंसल
RAJESH BANSAL
मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड.
India Security Press, Nashik Road.

संरक्षक की कलम से.....

नमस्कार साथियों।

हिंदी दिवस, 2024 के दौरान 'प्रतिमुद्रण' के 16 वें अंक के साथ मैं आप सभी सुधी पाठकों का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय (आईएसपी) की स्थापना वर्ष 1925 में नासिक की सहयाद्री पर्वतमालाओं की श्रृंखला की गोद में हुई थी। तब से लेकर अब तक इसने राष्ट्र की अखंड सेवा की है और भारतीय पासपोर्ट, डाक और पोस्टल विभाग के विभिन्न उत्पादों, एमआईसीआर चेक बुक, विभिन्न राज्य सरकारों के लिए सरकारी दस्तावेजों आदि का मुद्रण बहुत ही कारगर और दक्ष तरीके से किया है।

वर्ष 2025 में आईएसपी अपने स्थापना की सेंचुरी बनाने जा रहा है। आईएसपी की यह अविस्मणीय यात्रा विश्वास, परंपरा और आधुनिकता के कलेवर से सजी हुई है जिसमें कलात्मक ढंग से रंग भरने का कार्य आईएसपी प्रबंधन और इसके जागरुक कर्मचारियों ने किया है। साथ ही वर्ष 2006 में एसपीएमसीआईएल की एक इकाई बनने के बाद निगम मुख्यालय ने अपने प्रशासनिक और प्रबंधकीय गुणों से इसे सवारने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है।

आईएसपी को वर्ष 2022-2023 के लिए सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सीएमडी कप से सम्मानित किया जाना हम सभी के लिए बहुत हर्ष एवं गर्व की बात है। यह पुरस्कार माननीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण की गौरवशाली ऑनलाइन उपस्थिति और वित्त सचिव, एसपीएमसीआईएल बोर्ड सदस्यों, एसपीएमसीआईएल के नौ इकाईयों के मुख्य महाप्रबंधकों के बीच दिनांक 15 फरवरी, 2024 को प्रदान किया गया। इसके लिए आईएसपी की टीम बधाई की पात्र है।

आईएसपी राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। इसी कड़ी में नराकास, नासिक की वर्ष 2024 की पहली छमाही की राजभाषा समीक्षा बैठक नराकास, नासिक और आईएसपी के संयुक्त तत्वावधान में 26 जून, 2024 को

एसपीएमसीआईएल निगम अनुसंधान एवं विकास केंद्र, नासिक के प्रांगण में आयोजित किया गया जिसमें नराकास अध्यक्ष सहित सदस्य कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए। इस बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का पुरस्कार भी वितरित किया गया जिसमें आईएसपी, नासिक को वर्ष 2022- 2023 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

मुझे यह सूचित करते हुए भी बहुत हर्ष हो रहा है कि भारत प्रतिभूति मुद्रणालय (आईएसपी), नासिक को वर्ल्ड क्वालिटी कॉंग्रेस कार्यक्रम में मुद्रण (उपक्रम) श्रेणी में 'गुणवत्ता प्रबंधन और नेतृत्व उत्कृष्टता के लिए ग्लोबल अवार्ड' का प्रतिष्ठित पुरस्कार 12 जुलाई, 2024 को अवार्ड जूरी की उपस्थिति में ताज लैंड्स इण्ड, मुंबई में प्रदान किया गया। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से आईएसपी द्वारा निर्मित उत्पादों की गुणवत्ता में और अधिक उत्कृष्टता होगी और गुणवत्ता के क्षेत्र में एक बेंचमार्क स्थापित होगा। इसके लिए टीम आईएसपी को बधाई।

इसके अतिरिक्त आईएसपी लगातार सुरक्षा, संरक्षा, उत्पादन, गुणवत्ता और सीएसआर गतिविधियों के माध्यम से कल्याणकारी सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए अपने कर्मचारियों की हित रक्षा के लिए विभिन्न कर्मचारी कल्याण योजनाओं के माध्यम से अपनी सशक्त उपस्थिति नासिक और एसपीएमसीआईएल की अन्य इकाइयों के बीच दर्ज करा रहा है।

आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आईएसपी के गौरवशाली अतीत के अनुरुप ही इसका वर्तमान और भविष्य भी स्वर्णिम आभा से दमकेगा और इतिहास के सुनहले पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए यह भारत और भारतीय परंपरा के आख्यान में अपनी एक अभूतपूर्व अनुगूँज दर्ज करेगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ .....

राजेश बंसल
मुख्य महाप्रबंधक

बशीर बद्र के शेर

अच्छा तुम्हारे शहर का दस्तूर हो गया
जिस को गले लगा लिया वो दूर हो गया।

काग़ज में दब के मर गए कीड़े किताब के
दीवाना बे-पढ़े-लिखे मशहूर हो गया।

महलों में हम ने कितने सितारे सजा दिए
लेकिन जमीं से चाँद बहुत दूर हो गया।

तन्हाइयों ने तोड़ दी हम दोनों की अना!
आईना बात करने पे मजबूर हो गया।

दादी से कहना उस की कहानी सुनाइए
जो बादशाह इश्क में मजदूर हो गया।

सुब्ह-ए-विसाल पूछ रही है अजब सवाल
वो पास आ गया कि बहुत दूर हो गया।

कुछ फल ज़रूर आएँगे रोटी के पेड़ में
जिस दिन मिरा मुतालबा मंजूर हो गया।

संपादकीय.....

सप्रेम नमस्कार।

प्रतिमुद्रण के 16वें अंक के साथ भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में अपनी इस नई पारी की शुरुवात करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

अपने कार्य में रचनात्मक बने रहना और नवीन सृजन करते रहना ईश्वरीय वरदान से कम नहीं है। सृजन का सुख सर्वोच्च सुखों में से एक माना गया है। प्रतिमुद्रण के इस अंक के साथ आप भारत प्रतिभूति मुद्रणालय (आईएसपी) की स्थापना के 99वें साल के साक्षी बनेंगे। यह अपने आपमें एक रोमांचित करने वाला अवसर है। किसी भी संस्थान के इतने लंबे वर्षों की यात्रा उसके गौरवशाली इतिहास के साथ-साथ स्वर्णिम भविष्य की दास्तां को बयान करता है।

इस अंक में आईएसपी के सृजनकर्ताओं के माध्यम से इतिहास और भविष्य की सुंदर झाँकी के साथ उनके अपने अनुभवों से भी आप परिचित होंगे। इस अंक को विविध रचनाओं से समृद्ध करने का प्रयास किया गया है ताकि अंक के आखिरी पन्ने तक पाठक की जिज्ञासा बनी रहें। आशा है हम इसमें अवश्य सफल होंगे।

इस अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का सुख प्रदान करने के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आशा है कि प्रतिमुद्रण का यह अंक आपको नवीनता, रोचकता और सहज पठनीय रचनाओं से आपका मन मोह लेगा।

आपके रचनात्मक विचारों के स्वागत के साथ आपका.....

लोकनाथ तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा) और संपादक

किसी संगठन में वित्त विभाग की भूमिका

गुंजन सिंगला
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

वित्त विभाग किसी भी संगठन की आधारशिला है, जो संसाधनों के प्रबंधन, योजना और आवंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके कार्य बहुआयामी हैं, जिसमें व्यवसाय के वित्तीय स्वास्थ्य और स्थिरता के लिए आवश्यक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह निबंध वित्त विभाग की विभिन्न जिम्मेदारियों के साथ रणनीतिक योजना, परिचालन दक्षता, वित्तीय रिपोर्टिंग, जोखिम प्रबंधन और समग्र संगठनात्मक सफलता में इसके महत्व पर प्रकाश डालता है।

1. रणनीतिक योजना और निर्णय लेना :- वित्त विभाग की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक रणनीतिक योजना और निर्णय लेने में सहायता करना है। सटीक वित्तीय डेटा और विश्लेषण प्रदान करके, वित्त टीम वरिष्ठ प्रबंधन को संगठन की दिशा के बारे में उचित निर्णय लेने में मदद करती है। इसमें बजट बनाना, भविष्य के वित्तीय प्रदर्शन का पूर्वानुमान लगाना और नई परियोजनाओं या पहलों की वित्तीय व्यवहार्यता का मूल्यांकन करना शामिल है। वित्त विभाग की अंतर्दृष्टि दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि संगठन की रणनीति उसकी वित्तीय क्षमताओं के साथ एक हो।

2. संचालन दक्षता:- वित्त विभाग परिचालन दक्षता सुनिश्चित करने के लिए भी जिम्मेदार है। इसमें संगठन के नकदी प्रवाह का प्रबंधन करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दिन-प्रतिदिन के खर्चों और दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन हो। प्रभावी नकदी प्रवाह प्रबंधन तरलता के मुद्दों से बचने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि संगठन अपने संचालन को सुचारू रूप से जारी रख सके। इसके अतिरिक्त, वित्त विभाग लागत नियंत्रण उपायों की देख-रेख करता है, उन क्षेत्रों की पहचान करता है जहाँ गुणवत्ता या उत्पादकता से समझौता किए बिना खर्चों को कम किया जा सकता है। संसाधन आवंटन और व्यय को अनुकूलित करके, वित्त टीम संगठन की समग्र दक्षता को बढ़ाती है।

3. वित्तीय रिपोर्टिंग और अनुपालन :- सटीक और समय पर वित्तीय रिपोर्टिंग वित्त विभाग का एक और महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें बैलेंस शीट, आय विवरण और नकदी प्रवाह विवरण जैसे वित्तीय विवरण तैयार करना शामिल है, जो संगठन के वित्तीय स्वास्थ्य का एक स्नैपशॉट प्रदान करते हैं। ये रिपोर्ट आंतरिक हितधारकों, जैसे प्रबंधन और निदेशक मंडल, साथ ही निवेशकों, लेनदारों और नियामक निकायों सहित बाहरी हितधारकों के लिए आवश्यक हैं। वित्तीय विनियमों और मानकों का अनुपालन भी वित्त विभाग की एक प्रमुख

जिम्मेदारी है। लेखांकन सिद्धांतों और कानूनी आवश्यकताओं का पालन सुनिश्चित करने से संगठन की विश्वसनीयता बनाए रखने और कानूनी दंड से बचने में मदद मिलती है।

4. जोखिम प्रबंधन :- वित्तीय जोखिमों का प्रबंधन करना वित्त विभाग की एक मुख्य जिम्मेदारी है। इसमें संगठन की वित्तीय स्थिरता को प्रभावित करने वाले जोखिमों की पहचान करना, उनका आकलन करना और उन्हें कम करना शामिल है। आम वित्तीय जोखिमों में बाजार में उतार-चढ़ाव, क्रेडिट जोखिम, तरलता जोखिम और परिचालन जोखिम शामिल हैं। वित्त टीम इन जोखिमों को प्रबंधित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करती है, जैसे निवेश में विविधता लाना, क्रेडिट नीतियां निर्धारित करना और मजबूत आंतरिक नियंत्रण लागू करना। प्रभावी जोखिम प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि संगठन वित्तीय अनिश्चितताओं से निपटने के लिए अच्छी तरह से तैयार है और अपनी दीर्घकालिक व्यवहार्यता बनाए रख सकता है।

5. निवेश प्रबंधन :- वित्त विभाग संगठन के निवेशों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें जोखिम को संतुलित करते हुए सर्वोत्तम रिटर्न प्राप्त करने के लिए धन आवंटित करने के बारे में निर्णय लेना शामिल है। निवेश प्रबंधन में संभावित निवेश अवसरों का मूल्यांकन करना, उचित परिश्रम करना और मौजूदा निवेशों के प्रदर्शन की निगरानी करना शामिल है। निवेशों को रणनीतिक रूप से प्रबंधित करके, वित्त विभाग संगठन की वृद्धि और वित्तीय सफलता में योगदान देता है।

6. हितधारक संचार :- हितधारकों के साथ प्रभावी संचार विश्वास और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। वित्त विभाग संगठन के वित्तीय प्रदर्शन और रणनीतियों को विभिन्न हितधारकों तक पहुँचाने के लिए जिम्मेदार है। इसमें निदेशक मंडल, शेयरधारकों और निवेशकों को वित्तीय रिपोर्ट तैयार करना और प्रस्तुत करना, साथ ही निर्णय लेने में सहायता के लिए वित्तीय जानकारी प्रदान करना शामिल है। पारदर्शी संचार हितधारकों के बीच विश्वास बनाने में मदद करता है और संगठन और उसके वित्तीय भागीदारों के बीच सकारात्मक संबंध को बढ़ावा देता है।

7. नवाचार और विकास का समर्थन करना :- आज के तेजी से बदलते कारोबारी माहौल में, दीर्घकालिक सफलता के लिए नवाचार और विकास आवश्यक हैं। वित्त विभाग यह सुनिश्चित करके इन उद्देश्यों का समर्थन करता है कि संगठन के पास नई तकनीकों में निवेश करने, नए बाजारों में विस्तार करने और नए उत्पाद या सेवाएँ विकसित करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन हैं। वित्तीय विश्लेषण और अंतर्दृष्टि प्रदान करके, वित्त टीम नवाचार और विकास के अवसरों के साथ-साथ संभावित चुनौतियों और जोखिमों की पहचान करने में मदद करती है।

निष्कर्ष :- वित्त विभाग किसी संगठन की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी जिम्मेदारियाँ सिर्फ़ बहीखाते और वित्तीय रिपोर्टिंग से आगे बढ़कर रणनीतिक योजना, परिचालन दक्षता, जोखिम प्रबंधन, निवेश प्रबंधन, हितधारक संचार और नवाचार और विकास को सुनिश्चित करना हैं। संगठन के वित्तीय संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करके और मूल्यवान जानकारी प्रदान करके, वित्त विभाग व्यवसाय की समग्र स्थिरता, विकास और सफलता में योगदान देता है। इस प्रकार, यह किसी भी संगठन का एक अनिवार्य घटक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय लक्ष्य रणनीतिक उद्देश्यों के साथ संरक्षित हों और संगठन व्यवसाय की दुनिया की जटिलताओं को नेविगेट करने के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित हो।

******

मिस्ड कॉल प्राप्त हुई और पैसा गया...

रुद्र प्रताप सिंह
प्रबंधक (सू.प्रौ.)

आपने सुना और पढ़ा होगा कि हर दिन विभिन्न माध्यमों से आने वाले अनजान मैसेज लिंक पर क्लिक न करें। कल्पना करें, आपने ऐसा अनजान मैसेज पढ़ा ही नहीं, बिना लिंक देखे डिलिट भी कर दिया। हालाँकि, अगर लगातार दो या तीन मिस्ड कॉल हों और बैंक खाते से पैसे गायब हो जाएँ? उत्तरी दिल्ली की एक महिला वकील को हाल ही में इसका एहसास हुआ। लगातार तीन मिस्ड कॉल आई और कुछ ही मिनटों में रकम कटने का मैसेज भी आ गए। ना उन्होंने फोन पर किससे बात की; न ही उन्होंने किसी को ओटीपी बताया। ऐसा कुछ नहीं हुआ, फिर भी बड़ी मात्रा में वित्तीय धोखाधड़ी की गई। कॉल मिस हुई, फिर भी धोखा हुआ।

ऑनलाइन ठगी का पुराना फंडा

इस प्रकार की धोखाधड़ी को 'सिम कार्ड स्वैप फ्रॉड' कहा जाता है। अगर आपका मोबाइल आपके हाथ में है तो भी किसी तरह उसी नंबर का सिम कार्ड हासिल कर लिया जाता है और सही मौका पाकर वित्तीय धोखाधड़ी की जाती है। इस प्रकार में आप पहले से ही फ़िशिंग, विशिंग, स्मिशिंग (विश्वसनीय पार्टी होने का नाटक करना और आपकी गोपनीय जानकारी प्राप्त करना) में फंस चुके हैं। मोबाइल फोन खोने या गायब होने के कारणों का बहाना करके मोबाइल कंपनी से उसी नंबर का नया सिम कार्ड लिया जाता है। बाद में सही समय देख कर ऐसे लेन-देन किये जाते हैं। (चूंकि दिल्ली में ये वकील आमतौर पर अदालत में अपने फोन को साइलेंट पर रखती हैं, यह महत्वपूर्ण जानकारी पहले से ही प्राप्त की हुई थी।)

डिजिटल इको सिस्टम की सफाई

इन सभी सिम कार्ड आधारित धोखाधड़ी को समझते हुए, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने 'डिजिटल इको सिस्टम तंत्र' को साफ करने के लिए एक साथ आने का फैसला किया। इसके लिए विभिन्न एजेंसियां कई महीनों तक पर्दे के पीछे रहकर जांच अभियान चला रही थीं। अंततः दूरसंचार मंत्रालय ने 'सिम' बेचने वाले लोगों की देशव्यापी जांच कराई और उनमें पाई गई त्रुटियों के आधार पर 52 लाख 'सिम-कनेक्शन' समाप्त कर दिए; साथ ही देश के 67 हजार सिम कार्ड विक्रेताओं को 'ब्लैकलिस्टेड' कर दिया गया।

सुरक्षा के लिए नई प्रक्रिया

* नया सिम कार्ड लेते समय ग्राहकों को केवाईसी प्रक्रिया से गुजरना होगा। (अपने वर्तमान/पुराने नंबर का नया सिम लेते समय भी)। * सिम विक्रेताओं को जवाबदेह बनाने के लिए सिम जारी करते समय पुलिस विभाग द्वारा सत्यापन और बायोमेट्रिक सत्यापन अनिवार्य कर दिया गया है।

'संचार साथी' पोर्टल बनाया गया है, यहाँ (https://sancharsathi.gov.in) ग्राहकों के नाम पर कितने सिम कार्ड कनेक्शन हैं, क्या वे सभी उनके हैं? इसे चेक किया जा सकता है और फोन खो जाने पर नंबर ब्लॉक करने की भी सुविधा है।

इन सभी उपायों के साथ भी, ऐसी धोखाधड़ी होती है, तो इसका अर्थ है कि प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही धोखेबाज ने आपकी जासूसी कर ली है, आपको कभी पता नहीं चलता कि दांव कब लगाया जाएगा। इस डिजिटल युग में अगर कोई गैर-कार्यशील फोन नंबर मांगता है, तो सावधान रहें! आगे खतरा है! ******

हाईटेक युग के लिए उपयोगी नियोडिमियम

सचिन सोनी
उप प्रबंधक (मा.सं.)

वर्तमान युग अत्याधुनिक उपकरणों का है। उच्च गुणवत्ता वाली मशीनरी के निर्माण के लिए कच्चा माल अच्छी गुणवत्ता का होना चाहिए। भारतीय शोधकर्ताओं ने अगले दस वर्षों में आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाई है। इसमें 'नियोडिमियम' धातु का उल्लेख है। नियोडिमियम को तत्वों की आवर्त सारणी में दुर्लभ तत्व पंक्ति में 60वें स्थान पर रखा गया है। 1885 में, जब ऑस्ट्रियाई कार्ल उर वॉन वेल्शबाक ने खनिज से प्रेसियोडिमियम तत्व को अलग किया, तो उन्होंने इसके 'सहयोग' में एक अलग तत्व पाया। उन्हें लगा कि यह प्रेजियोडिमियम का जुड़वां भाई है। ग्रीक में नियो का मतलब 'नया' और डिडमोस का मतलब 'जुड़वां' होता है। इसलिए उन्होंने नए खोजे गए तत्व का नाम 'नियोडिमियम' रखा। नियोडिमियम एक चमकदार धातु है।

तत्वों की आवर्त सारणी में प्रेजियोडिमियम और नियोडिमियम को दुर्लभ तत्व (रेअर अर्थ्स की) पंक्ति में रखा गया है। हालाँकि, परमाणु संख्या 57 से 71 श्रृंखला के सभी तत्व बहुत मुश्किल से मिलने वाले ऐसे तत्व नहीं हैं, लेकिन 'दुर्लभ' हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके रासायनिक और भौतिक गुण इतने मेल खाते हैं कि उनका शुद्धिकरण कठिन और समय लेने वाला है। हालाकि इनका शुद्धिकरण हो सकता है क्योंकि ये धातुएँ और उनके लवण विभिन्न विलायकों में कम या ज्यादा घुलनशील होते हैं। नियोडिमियम का उपयोग कांच को बैंगनी, लाल रंग देने के लिए किया जाता है। वेल्डिंग करते समय नियोडिमियम का उपयोग सुरक्षात्मक चश्मे के लेंस में किया जाता है। इन विशेष चश्मों का उपयोग खगोलविदों द्वारा स्पेक्ट्रोफोटोमीटर में प्रयुक्त तारों का बेहतर अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इन धातुओं के लवण का उपयोग एनॅमल्ड के बर्तनों को रंगने के लिए भी किया जाता है। गैस लाइटर को चमकाने वाली मिश्रधातु में नियोडिमियम होता है।

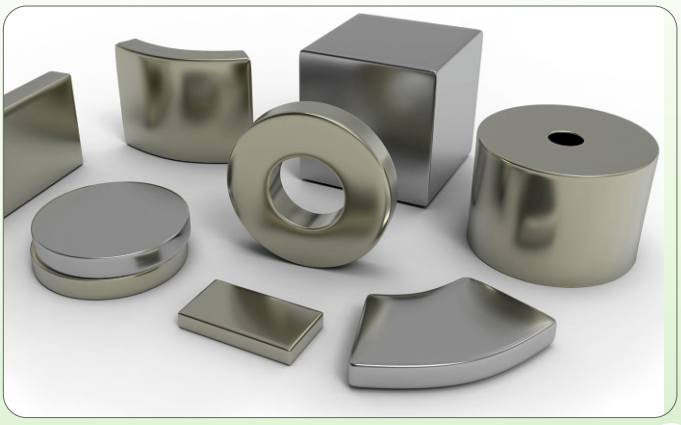

शक्तिशाली चुंबक

आधुनिक विश्व में सौर ऊर्जा, संचार, संचार उपकरण, अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा, सैन्य सामग्री, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषयों का महत्व बढ़ गया है। ऐसी जटिल प्रणालियों में छोटे लेकिन शक्तिशाली चुंबक अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। नियोडिमियम, लौह और बोरान के संयोजन से ऐसे चुम्बक बनते हैं जो पारंपरिक चुम्बकों की तुलना में तीन गुना अधिक मजबूत और टिकाऊ होते हैं। प्रयोगशाला में शक्तिशाली चुम्बकों का उपयोग करने पर दुर्घटनाएँ हो सकती हैं। यदि दोनों चुम्बकों के बीच उचित दूरी न हो तो वे आपस में बड़ी ताकत से टकराते हैं जिससे दुर्घटना हो सकती है। ऑडियो/वीडियो कैसेट, क्रेडिट कार्ड या मैकेनिकल कलाई घड़ियाँ इन चुम्बकों के पास लाने पर

आसानी से क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। जिन लोगों के दिल में पेसमेकर लगा हुआ है उन्हें इस चुंबक के पास नहीं जाना चाहिए।

कंप्यूटर में न्यूनतम स्थान में बड़ी मात्रा में मेमोरी/(डेटा) संग्रहित करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी हार्ड डिस्क ड्राइव में नियोडिमियम मैग्नेट का उपयोग किया जाता है। टेलीविजन सेट, सॉफ्टवेयर, लाउडस्पीकर और ऑन-ऑफ स्विच के लिए विशिष्ट ताकत के चुंबक की आवश्यकता होती है। चिकित्सा में, नियोडिमियम वर्गीय मैग्नेट का उपयोग नैदानिक और चिकित्सीय उपकरणों में किया जाता है। दंत चिकित्सक के उपकरणों और एमआरआई के उपकरणों में नियोडिमियम मैग्नेट का उपयोग किया जाता हैं। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की स्पष्ट और सटीक इमेज मिलती है। नियोडिमियम मैग्नेट का उपयोग कई प्रकार के आभूषणों में किया जाता है। उदाहरण के लिए, डूल (कान की बाली) पहनने के लिए कान की पाली को छेदना पड़ता है। लेकिन जिनके कानों में छेद नहीं होता है, ऐसी महिलाएं डूल का उपयोग करने के लिए एक छोटे शक्तिशाली नियोडिमियम चुंबक का उपयोग करती हैं, उन्हें किसी चक्री की जरूरत नहीं पडती। एक आधुनिक बैटरी चालित मोटर-कार लगभग एक किलोग्राम नियोडिमियम का उपयोग करती है। इसके चुंबक 150 से 200 डिग्री सेल्सियस के बीच के तापमान पर कुशलता से काम करते हैं। यह धातु अपने हल्के वजन के कारण बैटरी मोटर में उपयोग के लिए उपयुक्त है। इसका घनत्व प्रति घन से.मी. 7 ग्राम है। इन चुम्बकों का उपयोग माइक्रोवेव ओवन, स्मार्टफोन, कंप्यूटर आदि में किया जाता है। यह धातु क्रेन, मैकेनिकल ब्रेक में भी उपयोगी है।

दुनिया भर में प्रदूषण मुक्त नवीकरणीय-विकास के सिद्धांतों की वकालत की जाती है। इसके लिए नियोडिमियम जैसी अन्य दुर्लभ धातुओं का उपयोग किया जा रहा है। पवन ऊर्जा जनरेटर में मजबूत नियोडिमियम मैग्नेट का उपयोग किया जाता है। इससे बिजली की हानि कम हो जाती है और सिस्टम की कार्यक्षमता बढ़ जाती है। केवल दुर्लभ तत्वों के लिए आवश्यक खनिज भंडार भारत में कुछ स्थानों पर स्थित हैं। लेकिन ये तटीय विनियमन क्षेत्र और मैंग्रोव वन क्षेत्र में आते हैं। भारत में दुनिया के छह खनिज भंडार हैं। इस खनिज की दृष्टि से हमारा देश विश्व में पाँचवें स्थान पर है। भारत में ब्लैक स्टोन खनिज (बीएसएम) में लगभग 0.001 से 0.012 प्रतिशत नियोडिमियम और प्रेसियोडिमियम होता है। हम इसे 99.9 प्रतिशत शुद्ध कर सकते हैं। हालाँकि, थोडी यूरेनियम/थोरियम रेडियोधर्मिता के कारण, इसका उत्पादन करने में अधिक समय लगता है और उत्पादन करना महंगा हो जाता है। राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (नॅशनल जिओफिजिकल रिसर्च इन्स्टिट्यूट) ने आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में कुछ खनिजों की खोज की है। केरल के तट, तमिलनाडु, ओडिशा, महाराष्ट्र और गुजरात के तटों पर मोनाजाइट रेत में कुछ खनिज हैं। झारखंड में कुछ दुर्लभ खनिज हैं। विशाखापत्तनम में दुर्लभ धातुओं का उत्पादन करने के लिए एक जापानी कंपनी के साथ गठजोड़ किया गया है। चीन 97% के साथ दुर्लभ धातुओं का अग्रणी उत्पादक है। इसका अधिकतर निर्यात किया जाता है। चीन के पर्यावरण नियम शिथिलक्षम होने के कारण उसने दुर्लभ तत्वों के क्षेत्र में एकाधिकार हासिल कर लिया है। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील और रूस का स्थान है। पर्यावरण के अनुकूल तरीके से खनिजों से दुर्लभ तत्वों को अलग करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है। यदि दुर्लभ तत्व हमारे देश में ही आसानी से प्राप्त हो सकें तो हमें चीन या किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। राहत की बात यह है कि कुछ निजी कंपनियां इसके लिए प्रयास कर रही हैं।

******

सरकारी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का भविष्य

संजय गिरी
उप प्रबंधक (आईटी)

सरकारी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का भविष्य परिवर्तनकारी बदलाव के लिए तैयार है, जो सार्वजनिक सेवाओं में नवाचार और सुधार के नए तरीके पेश करता है। जैसे-जैसे दुनिया भर की सरकारें डिजिटलीकरण की चल रही चुनौतियों का सामना कर रही हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और ब्लॉकचेन जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों का एकीकरण आवश्यक होता जा रहा है। इन तकनीकों में पारदर्शिता बढ़ाने, प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और सरकारी कार्यों को अधिक कुशल बनाने और नागरिकों की जरुरतों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती जा रही है।

एआई, आईओटी और ब्लॉकचेन की शक्ति का उपयोग करना :- एआई सार्वजनिक सेवा वितरण में गेम-चेंजर हो सकता है। नियमित कार्यों को स्वचालित करके, निर्णय लेने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करके और व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करके, एआई सरकारों द्वारा अपने नागरिकों की सेवा करने के तरीके में काफी सुधार कर सकता है। उदाहरण के लिए, एआई-संचालित चैटबोट जनता के सामान्य प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं जिससे कर्मचारी अधिक जटिल मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) विशाल संभावनाओं वाली एक दूसरी तकनीक है।

आईओटी उपकरण सरकारों को वास्तविक समय में सड़कों, पुलों और सार्वजनिक उपयोगिताओं जैसे बुनियादी ढांचे की निगरानी और प्रबंधन में मदद कर सकते हैं। यह क्षमता अधिक कुशल संसाधन प्रबंधन और आपात स्थिति के लिए त्वरित प्रतिक्रिया की अनुमति देती है जिससे अंततः सुरक्षित और अधिक विश्वसनीय सार्वजनिक सेवाएं प्राप्त होती हैं।

ब्लॉकचेन तकनीक, जो अपनी सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए जानी जाती है, सार्वजनिक रिकॉर्ड की अखंडता को बढ़ाने का एक तरीका प्रदान करती है। धोखाधड़ी के जोखिम को कम करके और सरकारी लेन-देन में विश्वास बढ़ाकर, ब्लॉकचेन सरकारों और उनके नागरिकों के बीच विश्वास बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सरकारें अपने कर्मचारियों के डिजिटल कौशल को लगातार विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे इन नए उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें। शोध से पता चलता है कि सार्वजनिक क्षेत्र के 80% कर्मचारियों को उभरती प्रौद्योगिकियों का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह लक्षित शैक्षिक कार्यक्रमों

और पहलों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के भीतर नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों को सेवा वितरण में निरंतर सुधार लाने के लिए नए उपकरणों और दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वर्तमान कर्मचारियों की विशेषज्ञता का लाभ उठाकर और मानव-केंद्रित डिजाइन सिद्धांतों को लागू करके, सरकारें अधिक प्रभावी मानव-मशीन साझेदारी बना सकती हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र के काम को बढ़ाती हैं।

सरकारी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का भविष्य आशाजनक है, जिसमें अधिक प्रतिक्रियाशील, कुशल और पारदर्शी सार्वजनिक सेवाएँ बनाने की क्षमता है। एआई, आईओटी और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकी प्रगति को अपनाकर सरकारें अपने नागरिकों की जरुरतों को

बेहतर ढंग से पूरा कर सकती हैं और आधुनिक दुनिया की जटिल चुनौतियों से निपट सकती हैं। जैसा कि हम आगे देखते हैं, नवाचार और निरंतर सीखने की प्रतिबद्धता इन परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों की पूरी क्षमता को साकार करने में महत्वपूर्ण होगी।

******

शुरुआत

तुम कलम से चम्मच का काम नहीं ले सकते
जीने के पीछे की शर्त को ठीक से पढ़ो
मरने की कवायद शुरु हो जायेगी।

मैं जानता हूँ एक महासागर है तुम्हारे पास
फिर भी चाहे जितने रोप दो पौधे
फुलवारी कभी मुकम्मल नहीं होगी।

देखों अपने आस -पास
देश के नक्शे पर तुम्हारे कमरे का
कोई मुकाम नहीं।

जरा देखों गिरेबान
क्या सचमुच तुम बचे हुए हो?
कविता और कलम की कारीगरी छोड़ दो,
अपने सिले ओठों को जरा खुलने दो
देखों सूरज तुम्हारे सिर पर है
तुम बच नहीं सकते ताप से।

सम्हालो कि बीत ना जाए पहर
कुछ कसक देकर तुम्हारे हाथों को
मैं जानता हूँ वक्त का तकाजा बेहद बेरहम है,

पर कुछ करना हमेशा लाजिमी होता है
सुनो हवा की सनसनाहट
इसमें कुछ चीखे तुम्हारी साँसो की भी है।

बचाना ना चाहों आसमाँ
खुद को बचाने की शुरुआत तो
कर ही सकते हो।

लोकनाथ तिवारी
प्रबंधक (रा.भा.)

व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन

नवदीप कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

व्यक्तिगत वित्त एक महत्वपूर्ण विषय है जो हर व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करता है ताकि व्यक्ति अपने वित्तीय लक्ष्य पूरे कर सके और वित्तीय सुरक्षा प्राप्त कर सके। इस निबंध में, हम व्यक्तिगत वित्त के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से विचार करेंगे, जैसे कि बजटिंग, बचत, निवेश, कर्ज प्रबंधन, वित्तीय योजना और वित्त प्रबंधन का महत्व। इसके साथ ही, हम व्यक्तिगत वित्त में शिक्षा का महत्व, संपत्ति संचयन के लिए रणनीतियाँ और वित्तीय लक्ष्यों की भूमिका पर भी विचार करेंगे। तो आइए इस पर चर्चा आरंभ करते हैं।

व्यक्तिगत वित्त का परिचय :- व्यक्तिगत वित्त व्यक्तियों द्वारा लिए गए वित्तीय निर्णयों का प्रबंधन करता है ताकि वे अपने वित्तीय लक्ष्यों को पूरा कर सकें। इसमें आय, व्यय, बचत, निवेश और वित्तीय जोखिमों से संरक्षण शामिल होता है। व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन का सकारात्मक अनुप्रयोग वित्तीय स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत वित्त का महत्व :-

1. वित्तीय स्थिरता और सुरक्षा :-

* बजटिंग: बजट बनाने से व्यक्तियों को अपनी आय और व्यय को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिलती है।

* आपातकालीन निधि: आपातकालीन खर्चों के लिए बचत करना अनिवार्य है ताकि अनपेक्षित खर्चों से बचा जा सके।

* बीमा: उचित बीमा कवरेज से व्यक्तियों को स्वास्थ्य समस्याओं, दुर्घटनाओं या संपत्ति के क्षति से होने वाले वित्तीय हानियों से सुरक्षा मिलती है।

2. संपत्ति संचयन और विकास

* निवेश: शेयरों, बॉन्ड्स, रियल एस्टेट, म्यूच्यूअल फंड्स आदि में निवेश करने से भविष्य में धन बढ़ने की संभावना रहती है।

* रिटायरमेंट प्लानिंग: रिटायरमेंट के लिए बचत और निवेश करना सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति रिटायरमेंट के बाद आर्थिक स्वतंत्रता और आरामदायक जीवन जी सके।

3. कर्ज प्रबंधन :- * कर्ज प्रबंधन: यथायोग्य ऋण लेना और समय पर उसे वापस करना उचित क्रेडिट स्कोर बनाए रखने और अधिक ब्याज के भुगतान से बचाव करता है।

4. वित्तीय लक्ष्य प्राप्ति :- * लक्ष्य स्थापित करना: वित्तीय लक्ष्यों को स्पष्ट रुप से परिभाषित करना (जैसे घर खरीदना, शिक्षा का वित्त पोषण करना, व्यापार शुरु करना) वित्तीय निर्णयों के लिए दिशा और प्रेरणा प्रदान करता है।

* वित्तीय योजना: एक समग्र वित्तीय योजना वित्त, व्यय, बचत और निवेश को दीर्घकालिक उद्देश्यों के साथ समानुपातित करती है।

व्यक्तिगत वित्त के घटक

1. बजटिंग : बजटिंग व्यक्तिगत वित्त का आधार है। इसमें शामिल है:

* आय प्रबंधन: आय के स्रोतों को ट्रैक करना और यह सुनिश्चित करना कि वे व्ययों को कवर करते हैं।

* व्यय ट्रैकिंग: व्यय को मॉनिटर करना और खर्चों को श्रेणीबद्ध करना ताकि बचत के लिए क्षेत्रों की पहचान की जा सके।

* बजट आवंटन: आवश्यकताओं (आवास, खाद्य, उपयोगिताओं), वैकल्पिक व्यय (मनोरंजन, बाहर खाने का आनंद), बचत और कर्ज प्रतिपूर्ति के लिए धन आवंटित करना।

2. बचत :- बचत वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने और वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

* आपातकालीन निधि: एक खाते में ३-६ महीने के जीवन खर्च का भंडारण करना।

* दीर्घकालिक बचत: घर खरीदने के लिए डाउन पेमेंट करना, शिक्षा, या रिटायरमेंट जैसे विशिष्ट लक्ष्यों के लिए बचत करना आदि।

3. निवेश :- निवेश धन को वित्तीय वृद्धि और वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकसित करने में मदद करता है।

* संपत्ति श्रेणियाँ: शेयरों, बॉन्ड्स, म्यूच्यूअल फंड्स, ईपीएफ, रियल एस्टेट, और वैकल्पिक निवेशों में निवेश करना।

* जोखिम और रिटर्न: निवेशी की तालमेल को रखना, निवेशी की अपेक्षाएं के अनुसार निवेश होराइजन और वित्तीय लक्ष्यों के साथ रिटर्न की अपेक्षाएं तय करना।

4. कर्ज प्रबंधन :- कर्ज का उचित प्रबंधन वित्तीय स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।

* कर्ज प्रबंधन की रणनीतियाँ: स्माल बैलेंस से शुरु होकर बड़े बैलेंस तक के ऋणों को चुकाने की पद्धति, ब्याज धारा पद्धति, ऋण समेकन आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

5. रिटायरमेंट प्लानिंग :- रिटायरमेंट के लिए योजना बनाने से रिटायरमेंट के बाद आर्थिक स्वतंत्रता और सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है।

* रिटायरमेंट खाते: एनपीएस फंड पेंशन आदि।

* निवेश रणनीतियाँ: संपत्ति आवंटन, विविधीकरण, नियमित समीक्षा।

सक्रिय व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ

1. वित्तीय साक्षरता :- * शिक्षा: व्यक्तिगत वित्त के अवधारणाओं, सिद्धांतों, और अभ्यासों का ज्ञान रखना कारगर माना जाता है।

* संसाधन: पुस्तकें, कोर्सेज, सेमिनार्स, और ऑनलाइन स्रोतों का उपयोग करके वित्तीय साक्षरता को सुधारने में मदद मिलती है।

2. लक्ष्य स्थापना :- * स्मार्ट लक्ष्य: विशिष्ट, मापनीय, संभव, संबंधित, समय-सीमित लक्ष्य।

* प्राथमिकता: महत्वपूर्णता और क्षमताओं के आधार पर लक्ष्यों को रैंक करना।

3. बजटिंग तकनीकें :- * जीरो-आधारित बजटिंग: हर रु को व्यय, बचत, या कर्ज प्रतिपूर्ति के लिए आवंटित करना।

* एनवलोप प्रणाली: वित्तीय खर्च क्षेत्रों के लिए नकद एनवलोप का उपयोग करना।

4. बचत और निवेश :- * स्वचालित बचत: स्वचालित हस्तांतरण सेट करना बचत और निवेश खातों में।

5. कर्ज प्रबंधन रणनीतियाँ :- * कर्ज स्नोबॉल: सबसे छोटे अवस्थान से ऋणों का भुगतान करना।

* कर्ज अवलांच: सबसे अधिक ब्याज दर वाले ऋणों को प्राथमिकता देना।

6. जोखिम प्रबंधन :- * बीमा कवरेज: स्वास्थ्य, जीवन, अक्सीडेंट, और संपत्ति बीमा।

* इस्टेट प्लानिंग: विल लिखना, विश्वास

स्थापित करना, और लाभार्थी निर्धारित करना।

व्यक्तिगत वित्त में चुनौतियाँ

1. वित्तीय असाक्षरता :- * वित्तीय अवधारणाओं और अभ्यासों की कमी।

* प्रभावी निर्णय और लक्ष्य प्राप्ति में बाधा।

2. आर्थिक अनिश्चितता:- * बाजार की अस्थिरता और आर्थिक अवस्थाओं का प्रभाव।

3. जीवन शैली में वृद्धि :- * जीवन शैली में वृद्धि के कारण व्यय में वृद्धि।

4. कर्ज फंदा :- * उच्च ब्याज दर वाले कर्ज की जमा होने और अतिरिक्त ब्याज भुगतान की समस्या।

निष्कर्ष :- अंत में, व्यक्तिगत वित्त एक व्यापक क्षेत्र है जो बजटिंग, बचत, निवेश, कर्ज प्रबंधन, और वित्तीय योजना के विभिन्न पहलुओं को समाहित करता है। व्यक्तिगत वित्त के प्रभावी प्रबंधन से वित्तीय स्थिरता, सुरक्षा, और समृद्धि प्राप्त करने में मदद मिलती है। वित्तीय सिद्धांतों को समझना, स्पष्ट लक्ष्यों की स्थापना, बजटिंग का पालन करना, और उचित निवेश निर्णय लेना व्यक्ति के वित्तीय कल्याण को बढ़ाने में मदद करता है। निरंतर शिक्षा, आर्थिक परिवर्तनों का सामना करना और नियमित वित्तीय अभ्यास महत्वपूर्ण है ताकि व्यक्तिगत वित्त की जटिलताओं को सफलतापूर्वक हल किया जा सके।

******

मुझे नई एक दुनियाँ मिली

उमाकांत पंडित
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

जब हुई जन्म बेटी घर में,
परिवार सदस्य सब थे खुशी में,
माँ के मुख पर फूल खिली और,
मुझे नई एक दुनियाँ मिली।

जब गोद लिया मैंने उसको,
एहसास हुआ एक शक्ति मुझको,
जो बता ना पाया और किसी से,
वह आँसू बनकर टपके आँख से।

इधर देखती उधर देखती,
आँख मिचौली करती है,
कभी रोती है कभी हँसती है,
कभी हाथ तो कभी पैर उछालती है।

एक छोटी मुस्कान के साथ,
मन ही मन वह बोल पड़ी है,
माँ की लोरी से सो जाऊँगी,
पर पापा का हाथ जरूरी है।

बिना कुछ सोचे समझे,
इशारों में वह बोल पड़ी,
अब तो मुझे घुमाओ पापा,
अब तो शाम होने चली।

हुई रात तो बिटिया रानी बोल पड़ी,
अब तो थक गई है मम्मी,
अब आप ही मेरे संग खेलो ना पापा।
अब तो सो गई है मम्मी,
अब आप ही लोरी सुनाओ ना पापा,
अब आप ही लोरी सुनाओ ना पापा।

******

कुप्पाली वेंकटप्पा गौड़ा पुटप्पा कुवेम्पु

एस. एस. निकुंब
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राभा)

श्री कुप्पल्ली वेंकटप्पा पुट्टप्पा को 'श्री रामायण दर्शनम्' नामक महाकाव्य की वजह से प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री कुप्पल्ली वेंकटप्पा पुट्टप्पा का रचना काल 29 दिसंबर 1904 से 11 नवंबर 1994 था तथा वे अपने कलम नाम 'कुवेम्पु' से लोकप्रिय थे।

वे एक भारतीय कवि, नाटककार, उपन्यासकार और आलोचक थे। उन्हें व्यापक रूप से 20 वीं सदी का सबसे बड़ा कन्नड़ कवि माना जाता है। वे ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले पहले कन्नड़ लेखक थे।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा :- कुप्पाली वेंकटप्पा पुटप्पा उर्फ 'केवेम्पु'का जन्म 29 दिसम्बर, 1904 को चिकमंगलूर जिले के कोप्पा तालुक के हिरेकोडिगे गाँव में हुआ था और उनका पालन-पोषण पूर्ववर्ती मैसूर साम्राज्य (अब कर्नाटक में) के शिवमोग्गा जिले के कुप्पल्ली गाँव में एक कन्नड़ भाषी वोक्कालिगा परिवार में हुआ था। उनकी माँ सीताम्मा (सीथम्मा) कोप्पा, चिकमंगलूर से थीं, जबकि उनके पिता वेंकटप्पा कुप्पली से थे, जो तीर्थहल्ली तालुका (वर्तमान शिमोगा जिले में) का एक गाँव है , जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ। वह जब 12 साल के थे, तभी उनके पिता का देहांत हो गया। बचपन के शुरुआती दिनों में, कुवेम्पु को दक्षिण केनरा से नियुक्त एक शिक्षक ने घर पर ही पढ़ाया था। उन्होंने अपनी मिडिल स्कूल की शिक्षा जारी रखने के लिए तीर्थहल्ली में एंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूल में दाखिला लिया। उन्होंने कन्नड़ और अंग्रेजी भाषा में अपनी निचली और माध्यमिक शिक्षा तीर्थहल्ली में पूरी की और वेस्लेयन हाई स्कूल में आगे की शिक्षा के लिए मैसूर चले गए। इसके बाद, उन्होंने मैसूर के महाराजा कॉलेज में कॉलेज की पढ़ाई की और 1929 में कन्नड़ में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उसके तुरंत बाद उन्होंने महाराजा कॉलेज में ही प्राध्यापक के रूप में नौकरी करके अपने व्यावसायिक जीवन की शुरूआत की।

परिवार :- कुवेम्पु ने 30 अप्रैल 1937 को हेमावती से विवाह किया। कुवेम्पु के दो बेटे, पूर्णचंद्र तेजस्वी और कोकिलोदया चैत्र और दो बेटियाँ, इंदुकला और थारिनी हैं। थारिनी का विवाह कुवेम्पु विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति के. चिदानंद गौड़ा से हुआ है। मैसूर में उनके घर को उदयरवी कहा जाता है। उनके बेटे पूर्णचंद्र तेजस्वी एक बहुश्रुत थे जिन्होंने कन्नड़ साहित्य, फोटोग्राफी, सुलेख, डिजिटल इमेजिंग, सामाजिक आंदोलनों और कृषि में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कैरियर :- कुवेम्पु ने 1929 में मैसूर के महाराजा कॉलेज में कन्नड़ भाषा के व्याख्याता के रूप में अपना शैक्षणिक जीवन शुरू किया। उन्होंने 1936 से बैंगलोर के सेंट्रल कॉलेज में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम किया। वे 1946 में मैसूर के महाराजा कॉलेज में प्रोफेसर के रूप में फिर से शामिल हुए। वे 1955 में महाराजा कॉलेज के प्रिंसिपल बन गए। 1956 में उन्हें मैसूर विश्वविद्यालय का कुलपति चुना गया, जहाँ उन्होंने 1960 में सेवानिवृत्ति तक सेवा की। वे मैसूर विश्वविद्यालय से इस पद

पर पहुँचने वाले पहले स्नातक थे।

श्री कुवेम्पु ने कन्नड़ भाषा में शिक्षा की शुरुआत की। उन्होंने कन्नड़ को शिक्षा के लिए माध्यम बनाने के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया, 'मातृभाषा में शिक्षा' विषय पर जोर दिया। कन्नड़ शोध की जरूरतों को पूरा करने के लिए, उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय में कन्नड़ अध्ययन संस्था की स्थापना की, जिसे बाद में इसका नाम बदलकर 'कुवेम्पु इंस्टीट्यूट ऑफ कन्नड़ स्टडीज' कर दिया गया। मैसूर विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में उन्होंने विज्ञान और भाषाओं के अध्ययन का बीड़ा उठाया। उन्होंने 'जी. हनुमंत राव' के साथ काम करने वालों के लिए ज्ञान के प्रकाशन को चुनौती दी।

1955 में 'श्रीरामायण दर्शनम्' के लिए श्री कुवेम्पु को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा डि.लिट. से नवाजा गया। 1958 में उन्हें भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा में पद्म भूषण पुरस्कार प्रदान किया गया। कन्नड़ साहित्य में उनके योगदान के लिए कर्नाटक सरकार ने उन्हें 1964 राष्ट्रकवि ('राष्ट्रीय कवि') से सम्मानित किया। 1966 में कर्नाटक विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डि.लिट. प्रदान किया गया। 1967 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया। 1969 मे बेंगलुरू विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डि.लिट. से सम्मानित किया गया। उन्हें 1987 में पम्पा पुरस्कार मिला। बाद में उन्हें 1988 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा में पद्म विभूषण, 1989 में पद्म विभूषण और 1992 में कर्नाटक सरकार द्वारा कर्नाटक रत्न ('कर्नाटक का रत्न') से सम्मानित किया। उन्होंने कर्नाटक राज्य गान जय भारत जननीय तनुजते लिखा।

श्री कुप्पल्ली वेंकटप्पा पुट्टप्पा के साहित्य में 'श्रीरामायण दर्शनम्', 'अमलन कथे', 'पांचजन्य', 'अनिकेतन', 'शूद्र तपस्वी', 'वाल्मीकीय भाग्य', 'तपोनंदन' अमलन कथे, बोम्मनहळ्ळयि किंदरिजोगि जैसे शिशु साहित्य, चित्रांगदा जैसा खंडकाव्य, श्रीरामायण दर्शनम् जैसा महाकाव्य, डण्णन तम्म, जलगार, यमन सोलु जैसे नाटक, कानूरु सुब्बम्म हेग्गडति, मलेगळल्लि मदुमगळु ये उपन्यास, संन्यासि मत्तु इतर कथेगळु, नन्न देवरु मत्तु इतरे कथेगळु आदि कथा संकलन, आत्मश्रीगागि निरंकुशमतिगळागि, साहित्य प्रचार काव्य विहार, तपोनंदन आदि गद्य, विचार तथा प्रबंध, नेनपिन दोणियल्लि यह आत्मकथा श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद जीवन चरित्र आदि साहित्य के साथ अन्य कई साहित्य है।

कुवेम्पु के बचपन के घर कुप्पली को राष्ट्रकवि कुवेम्पु प्रतिष्ठान (कुवेम्पु को समर्पित एक ट्रस्ट) द्वारा संग्रहालय में बदल दिया गया है। इस ट्रस्ट ने कुवेम्पु और उनके कार्यों को बाहरी दुनिया के सामने प्रदर्शित करने के लिए कुप्पली में बहुत सारे विकास कार्य किए हैं। 23 नवंबर 2015 की रात को कविमने से कई कीमती सामान चोरी हो गए, जिनमें कवि कुवेम्पु को दिए गए पद्म श्री और पद्म भूषण पुरस्कार शामिल हैं। पूरे संग्रहालय में तोड़फोड़ की गई है। वहां लगे निगरानी कैमरे भी क्षतिग्रस्त कर दिए गए हैं। लेकिन वहां रखा ज्ञानपीठ पुरस्कार सुरक्षित है।

श्री कुवम्पु के कन्नड साहित्य में योगदान को देखते हुए भारतीय डाक ने 1997 और 2017 में उनके सम्मान में डाक टिकट जारी करके कुवेम्पु को सम्मानित किया गया।

यदि कुप्पाली वेंकटप्पा पुटप्पा की रचनाओं पर फिल्मों की बात करें तो गिरीश कर्नाड ने कन्नड़ में उन पर एक फिल्म बनाई

थी। गिरीश कर्नाड ने 1999 में 'कनरू हेग्गाडिथी' फिल्म बनाई थी, जो कुवेम्पु के उपन्यास 'कनरू सुबम्मा हेग्गाडिथी' पर आधारित थी। फिल्म की कहानी आजादी से पहले के एक परिवार की थी।

इस फिल्म ने सन 2000 में कन्नड़ की बेस्ट फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीता था। दिलचस्प बात यह थी कि फिल्म रिलीज होने के बाद लोगों की इस उपन्यास में दिलचस्पी बढ़ गई थी और इसकी 2000 प्रतियां और छापी गई थीं।

कन्नड़ के पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार की स्वर्ण जयंती मनाने के लिए, 29 दिसंबर 2017 को, कुवेम्पु की 113वीं जयंती पर, गूगल इंडिया ने उनके सम्मान में एक गूगल डूडल समर्पित किया। गूगल ने अपने इस डूडल में दिखाया है कि कुप्पाली वेंकटप्पा पुटप्पा एक बड़े पत्थर पर बैठे साहित्य लिख रहे हैं, उनके पीछे सुंदर प्रकृति को दर्शाया गया है। उसके साथ गूगल का कन्नड़ भाषा के अंदाज में सफ़ेद रंग का गूगल लोगो भी दिखाया गया है।

श्री कुप्पल्ली वेंकटप्पा पुट्टप्पा की मृत्यु 11 नवम्बर, 1994 को 89 वर्ष की आयु में मैसूर, कर्नाटक में हुई।

******

गोबरैला

अभिषेक राय
सहायक प्रबंधक (विधि)

गांव-देहात में एक कीड़ा पाया जाता है, जिसे गोबरैला कहा जाता है। उसे गाय, भैंसों के ताजे गोबर की बू बहुत भाती है। वह सुबह से गोबर की तलाश में निकल पड़ता है और सारा दिन उसे जहां कहीं गोबर मिल जाता है, वहीं उसका गोला बनाना शुरू कर देता है। शाम तक वह एक बड़ा सा गोला बना लेता है। फिर उस गोले को ढ़केलते हुए अपने बिल तक ले जाता है।

लेकिन बिल पर पहुँच कर उसे पता चलता है कि गोला तो बहुत बड़ा बन गया मगर उसके बिल का द्वार बहुत छोटा है। बहुत परिश्रम और कोशिशों के बाद भी वह उस गोले को बिल के अन्दर नहीं ढकेल पाता और उसे वहीं पर छोड़कर बिल में चला जाता है।

यही हाल हम मनुष्यों का भी है। पूरी जिन्दगी हम दुनियाभर का मालमत्ता जमा करने में लगे रहते हैं, और जब अन्त समय आता है, तो पता चलता है कि ये सब तो साथ नहीं ले जा सकते। और तब हम उस जीवन भर की कमाई को बड़ी हसरत से देखते हुए इस संसार से विदा हो जाते हैं।

******

शून्य प्रतिशत कचरा - एक संकल्पना

अमोल गवारी
कार्यालय सहायक (के.मु.डी.)

हाल ही में ही, पर्यावरणविज्ञों ने यह अंदेशा जताया है कि आनेवाले कुछ दशकों में 'कचरा' पूरी दुनिया के लिए सबसे बड़ी समस्या बनने वाला है। आजकल धरती पर कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ पर कचरा मौजूद नहीं है, बल्कि इस धरती के बाहर भी अंतरिक्ष में मानवनिर्मित उपग्रहों का कचरा घूम रहा है, जोकि समस्त मानव जाति के लिए एक खतरे की घंटी है।

यह अस्सी या नब्बे के दशक की बात है, यह एक दौर था जब प्लास्टिक का इस्तेमाल कैरीबैग के लिए नहीं हुआ था। बहुत सी चीजों में प्लास्टिक का उपयोग नहीं होता था। उदहारण के तौर पर अगर हमें कोई राशन लेना पड़ता था तो दुकानदार हमें उसे कागज में या फिर कपडे की थैली में या टिन के डिब्बों में राशन देता था। उस समय तक पोलीथिन की थैली या प्लास्टिक के कोई कैन या पैकेट नहीं मिलते थे। और जब यह राशन का सामान लेने के लिए हमारे पास कोई चीज नहीं होती थी तो हम वह राशन घर भी लेकर नहीं जा सकते थे। तो फिर बस इसी चीज का इन सारी कंपनी वालों ने फायदा उठाया और उन्होंने फिर प्लास्टिक के पैकेट में अपना माल देने की शुरुवात कर दी। यह देने में भी सस्ता और फायदेमंद था, और दुकानदार को भी उसके लिए अलग से पैकिंग की जरुरत नहीं पड़ती थी। और आज तो इन पैकेजिंग सामान या फूड की लोगों को इतनी आदत पड गई है कि लोग दुकान में या बाजार में भी जाते है तो घर से कोई थैली लेकर नहीं जाते क्योंकि सारी चीजे अब हमें प्लास्टिक की पोलीथिन में मिलने लगी है, और लोगों के पास अब इतना पैसा हो चुका है कि अगर कोई दुकानदार प्लास्टिक बैग्स के लिए पैसे भी मांगता है तो लोग उसके लिए पैसे दे देते है।

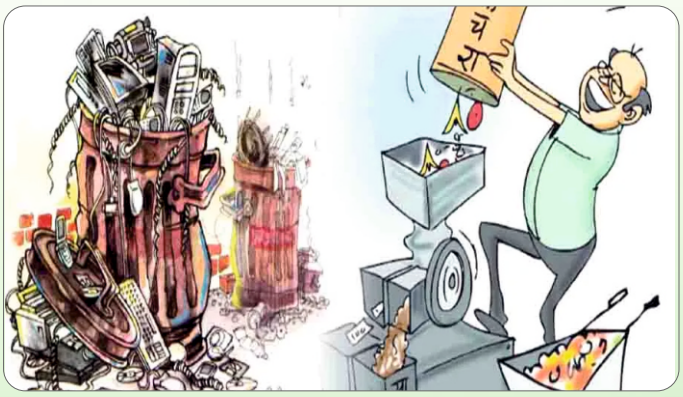

इसी प्लास्टिक के मामले में अगर हम थोड़ी गहराई में सोचेंगे तो हमें पता चलेगा कि हम कितना प्लास्टिक एक महीने भर में इकठ्ठा करते है। क्या हो अगर हम प्लास्टिक की पोलीथिन में सब्जी या सामान लेना बंद कर दे। कुछ लोग तो जब मिठाई के दुकान से बहुत सारी मिठाइयाँ लेते है जोकि पहले से ही प्लास्टिक के पैकेट में उपलब्ध होती है, और फिर सारा सामान घर लेकर जाने के लिए वे फिर प्लास्टिक की थैली अलग से मांग लेते है, जिसे वे टाल सकते हैं। बस इसी तरह हर रोज एक एक कर के पूरे महीने भर की बहुत सारी पोलीथिन बैग्स हमारे पास जमा हो जाती है, लेकिन इसे संभाल कर कौन रखता है। इसे कचरे में फेक दिया जाता है और ये सब प्लास्टिक का कचरा रखने के लिए भी हम लोग पोलीथिन की काले रंग की गार्बेज बैग अलग से खरीद कर उसे कूड़े के डब्बे में रखते है। इस तरह से प्लास्टिक का प्रदुषण और फैलेगा नहीं तो क्या होगा, जोकि कभी खत्म होने वाला नहीं है।

जापान में एक गाँव है, जिसका नाम है 'कामिकात्सु'। इस दुनिया में यह एक ही ऐसा गाँव है, जहाँ

पर कचरा नहीं है, या फिर आप इसे 'शून्य प्रतिशत कचरे वाला गाँव' भी कह सकते है। आपको जानकर आश्चर्य जरुर होगा। लेकिन यह सच है कि इस गाँव में आपको किसी के भी घर पर कचरा दिखाई नहीं देगा। अब आप पूछोगे कि ऐसा कैसा हो सकता है, तो इसका जवाब यह है कि यहाँ के लोगो ने अपने अपने घर के कचरे की पूरी तरह से प्लानिंग कर के रखी है। जब इन लोगों से पूछा गया तो इन्होंने बताया कि हम कचरा तैयार होने ही नहीं देते। इसका मतलब यह है कि ये लोग अपने घर के कचरे को पूरी तरह से अलग-अलग कर के रखते है। जो भी प्लास्टिक या पोलीथिन की बैग्स आती है तो उसे वे सबसे पहले धोकर रखते है, फिर उसे साफ करके संभलकर रखते है, प्लास्टिक की बोतलें, प्लास्टिक के ढक्कन, काँच की बोतल, कागज के टुकड़े, छोटी-छोटी रस्सी या धागे, इन सब चीजो को अलग-अलग कंटेनर में रखते है। और हर महीने में कबाड़ीवाला जब आता है तो उसे ये सारी चीजे कबाड़ के रुप में बेच देते हैं। और रहा सवाल गिले कचरे का, मतलब जो कचरा किचन से बाहर आता है, तो ऐसे कचरे को ये लोग घर के गार्डन में एक गढ्ढा खोदकर उसमें डाल देते हैं जिससे अच्छी तरह की कंपोस्ड खाद तैयार होती है, जिसे लोग अपने पौधो में डाल देते हैं। इस तरह से इस गाँव में कचरा तैयार ही नहीं होता। इसी तरह से हमें भी अपने कचरे की व्यवस्था करनी चाहिए।

हमारे शहरों में भी कई सारी प्लास्टिक रिसायकल करने वाली फैक्टोरियाँ होती है। जब इन फैक्टरी वालो से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि हमारा ज्यादा से ज्यादा समय तो कचरे को अलग-अलग करने में ही लग जाता है, जब भी हमारे पास प्लास्टिक का कोई कचरा आता है, तो उसे हम पहले पानी से अच्छी तरह से धोते है, फिर उससे धातु की चीजे और अलग अलग रंग के प्लास्टिक को हम अलग करते है। फिर उससे प्लास्टिक के छोटे-छोटे गेहू के दाने जितने गोले बनाकर उसे कच्चे मटेरियल की तरह बनाकर प्लास्टिक उत्पादक कम्पनियों को बेचते है। उसी से प्लास्टिक के गमले, कटोरी, कुर्सी जैसी वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है जिसे हम और आप ऑनलाइन खरीदते है।

आम तौर पर हमारे घर में जो कचरा तैयार होता है वो इस प्रकार का होता है, 1. कागज, 2. काँच, 3. पतला प्लास्टिक 4. चिनी मिट्टी के बने हुए बर्तन के टुकड़े 5. ओर्गानिक वेस्ट।

1. कागज :- हमारे घर में सबसे पहले न्यूज पेपर से कागज आता है। इसके बाद जो भी पैक फूड हो या कागज का लेबल हो, हम इन लेबलों को फाड़ कर कूड़े में डाल देते है। हमें ये आदत लग चुकी है कि जो कागज काम का नहीं होता, उसे हम बिना सोचे समझे ही फाड़ कर फेक देते है और फिर ऐसे फटे हुए कागज को कबाड़ी वाला लेता नहीं है। इसीलिए हम उसे कचरे में डाल देते है। अगर हम पुराने न्यूज पेपर का एक बैग बनाकर उसमे ये सारे कागज के लेबल इकठा कर के रख देंगे और फिर इस बैग को रद्दी के साथ ही बेच देंगे तो कबाड़ी वाला भी इसे लेने से इनकार नहीं करेगा।

2. काँच :- काँच भी ऐसा एक पदार्थ है जिसके टूटने के बाद वो हमारे किसी काम का नहीं रहता। अगर शीशे की काँच के बड़े टुकड़े हो जाते है तो उसे हम शीशे बनाने वाले से काटकर अच्छी शीशे की काँच तैयार कर सकते है। काँच की अच्छी बोतल हो तो वो काम आ सकती है। कबाड़ी वाले भी काँच लेते है क्योंकि उसे रिसायकल करने में फॅक्टरी को भी कम लागत और मेहनत पड़ता है।

3. प्लास्टिक :- प्लास्टिक का भी हम घर में बहुत कूड़ा बना देते है। बाहर से कोई भी पैकिंग फ़ूड आया तो उसका प्लास्टिक हम बिना सोचे ही कूड़े में डाल देते है। अगर आप ऑनलाइन सर्च करोगे तो आपको प्लास्टिक रिसायकल करने के बहुत तरीके मिल जायेंगे। प्लास्टिक की बोतल या डिब्बे तो कबाड़ी वाला लेता है, लेकिन पतले प्लास्टिक की पोलीथिन की थैली वह नहीं लेता। अगर हम चाहे तो ये पोलीथिन की थैली जब तक अच्छी है तब तक उसे सामान लेने के लिए इस्तेमाल कर सकते है। अगर वो फट जाए तो उससे हम एक मजबूत रस्सी, चटाई भी बना सकते है। प्लास्टिक ये ऐसी चीज है जो नष्ट नहीं

होती है। लेकिन हम लोगो ने इसका गलत मतलब निकाला है। इसका हम सही तरीके से इस्तेमाल नहीं कर रहे है। वैसे तो प्लास्टिक की थैलियों पर सरकार ने प्रतिबंध जरुर लगाया है। लेकिन फिर भी छोटे विक्रेताओ के पास यही प्लास्टिक थैली बड़ी आसानी से मिल जाती है। अगर हम महीने भर से बची हुई इन थैलियों को उन्हें फिर से लौटा दे तो वे उसे लेने से मना नहीं करेंगे। तो इस तरह से हम प्लास्टिक को रिसायकल कर सकते हैं। रहा सवाल छोटे-बड़े प्लास्टिक के पैकेट का तो इसे हम साफ कर प्लास्टिक की बोतल में दबाकर भर सकते हैं और फिर उसे कबाड़ी वाले को दे सकते हैं जिससे हमारे प्लास्टिक की बोतल का वजन भी बढेगा और कबाड़ी वाले को बेचकर हमें उससे मुनाफा भी होगा।

4. चिनी मिट्टी के बर्तन के टुकड़े :- ये तो एक प्रकार की मिटटी ही रहती है। लेकिन जब तक वह बर्तन के टुकडों के रुप में है तब तक उसका कोई और इस्तेमाल नहीं होगा। लेकिन टूटने के बाद हम इसे चल रहे कंस्ट्रक्शन की जगह पर इस्तेमाल किया जा सकता है। या फिर अगर आप चाहो तो इन टुकडों से अच्छी डिजाइन बनाकर अपने गमलों पर चिपका कर उसे आकर्षक बना सकते हैं।

5. ऑर्गेनिक वेस्ट :- आपके घर से निकलने वाला जैविक कचरा जोकि कंपोस्ट खाद बनाने में बहुत काम आता है जिसमें हरी सब्जियों की जड़े, फल की छाल आदि पदार्थ होते है। इनसे हम ऑर्गेनिक खाद तैयार कर सकते हैं, जोकि पेड़-पौधो के लिए अच्छी मानी जाती है। ये खाद कैसे बनाते है इसके आपको ऑनलाइन ढेर सारे तरीके मिल जाएंगे। दो या तीन महीने में ये खाद अच्छी तरह से तैयार होती है। यह खाद तैयार करने के लिए आपको एक जालीदार प्लास्टिक की बास्केट या मिट्टी का गमला भी ले सकते हैं। पहले सबसे नीचे आपको मिट्टी की आधी इंच की परत इसमें लगानी है। फिर इसके ऊपर ओर्गेनिक वेस्ट पदार्थो को डाल सकते हैं। अगर आप इन्हें बारीक-बारीक काटकर डालेंगे तो ये जल्दी से सड़ जायेंगे। फिर इसके ऊपर आप सूखा कचरा मतलब प्याज लहसुन के छिलके या फिर पेड़ के सूखे पत्ते, फिर इसके ऊपर मिट्टी की एक परत बना सकते हैं। इसी प्रकार की परत आप एक के ऊपर एक रखते जायेंगे तो सिर्फ 15 दिनों में ही यह परत नीचे दब जाएगी और फिर 15 दिनों में इसकी बकेट भी भर जाएगी। फिर इसमें जो बैक्टेरिया है वो इन पदार्थो का विघटन करके इनकी दो महीने में खाद तैयार कर देती है। आपको इसका ध्यान रखना होगा कि इसमें बेकरी में तैयार होने वाले पदार्थ जैसे पाव, ब्रेड जैसे पदार्थ नहीं डालने है क्योंकि इसमें फंगस लगने की सम्भावना होती है। ऐसी खाद आपने पेड़ पौधो के लिए हानिकारक होती है। बस आपको 15-20 दिनों के बाद इस खाद को अच्छी तरह से मिक्स करते रहना है, जिससे इसके अन्दर हवा भी आती रहेगी और इससे बदबू भी नहीं आएगी। ऐसे खाद में बैक्टेरिया की मात्रा को बढ़ने के लिए आप इसमें दही और पानी में घुले हुए गुड भी डाल सकते है। फिर आपकी खाद का विघटन अच्छी तरह से हो जायेगा। बस इसमें आपको पानी की नमी जरुर रखनी होगी वरना धूप में इसका विघटन अच्छी तरह से नहीं होगा। अंत में इस खाद को आप अच्छी तरह से छानकर अपने पौधो में डाल सकते हैं।

आजकल बहुत सारी संस्थाए है जो पर्यावरण को बचने की कोशिश कर रही है। यह संस्थाएं पेड़-पौधे तो लगाती ही है, साथ में ही उनके सोशल मिडिया पर ग्रुप है जोकि अलग- अलग शहर में काम करते है। इन ग्रुप के माध्यम से जुड़कर भी आप अच्छा काम कर सकते हैं। अगर आप अपने घर के कचरे को अच्छी तरह से वर्गीकरण कर रखेंगे तो आपके घर से कूड़ा कचरा तैयार नहीं होगा। पूरे दिन में से सिर्फ 10-15 मिनटों का यह काम है। अगर आपको ऐसा काम करने की आदत लग जाएगी, तो फिर बाद में छोटी से भी छोटी किसी चीज को आप फेकोगे नहीं। क्या पता पूरे साल भर के ऐसे बिना इस्तेमाल की चीजो को अगर आप कबाड़ी वाले को बेचेगे तो शायद साल के आपके एक या दो महीने के बिजली का खर्चा इसी से ही निकल जाए।

******

नजरिया बदलो, जिंदगी बदल जायेगी

अशोक अरुण डे
पर्यवेक्षक (तक.नि.)

अगर हम कोई नाटक देखने जाते हैं तो हम आगे की सीट मांगते हैं और अगर हम कोई फिल्म देखने जाते हैं तो हम पीछे की सीट मांगते हैं। दुनिया में आपका स्थान भी इसी तरह सापेक्ष है। यह कभी भी स्थिर नहीं रहता। साबुन बनाने के लिए तेल एक आवश्यक सामग्री है और तेल का दाग हटाने के लिए साबुन की ही आवश्यकता होती है..! यह एक अकाट्य विरोधाभास है। दुनिया में दो तरह के लोग खुश होते हैं, पागल लोग और बच्चे! अच्छे काम के प्रति जुनूनी रहें और लक्ष्य प्राप्त होने पर एक बच्चे की तरह इसका आनंद लें। जीने का आनंद लें।

जीवन बहुत सुन्दर है। लेकिन उस तरह जिना चाहिएं। आईना वही है। जब आप उसमें मुस्कुराते हुए देखते हैं तो आप खुश दिखते हैं और जब आप उसमें रोते हुए देखते हैं तो आप दुखी दिखते हैं। उसी तरह, जीवन भी एक ही है, केवल हमारा दृष्टिकोण ही इसे सुखी या दुःखी बनाता है। इसलिए नजरिया महत्वपूर्ण है। नजरिया बदलो, जिंदगी बदल जायेगी।

* दृष्टिकोण कितना महत्वपूर्ण है, इसे गणित की भाषा में समझते हैं। 'एक शानदार जीवन जीने के लिए आसान कल्पना - एक मजेदार गणित देखें, हल करें या छोड़ें लेकिन आनंद अवश्य लें।'

चलिए मान लेते हैं कि....

ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी, एच, आई, जे, के, एल, एम, एन, ओ, पी, क्यू, आर, एस, टी, यू, वी, डब्ल्यू, एक्स, वाई = क्रमशः 1, 2, 3,4,5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23 , 24, 25, 26.

अर्थात, ए=1, बी=2, सी=3 इस तरह माना तो

आइये देखते हैं व्यक्ति के किस गुण को मिलते हैं पूरे सौ अंक...

हम कहते हैं कि कड़ी मेहनत /हार्डवर्क करने से ही जीवन सफल होता है।

आइए देखें HARDWORK के गुण।

H+A+R+D+W+O+ R+K=
8+1+18+4+23+15+18+11 = *98%* हैं लेकिन पूरे नहीं।

एक अन्य महत्वपूर्ण गुण को 'ज्ञान' या 'Knowledge' कहा जाता है। आइए देखते हैं इसके अंक।

K +N+O+W+L+E+D+G+E=
11+14+15+23 +12+5+ 4 + 7 + 5 = *96%

पहले से कम।

कुछ लोग कहते हैं * 'भाग्य'/LUCK* जरूरी है। तो आइये देखते हैं भाग्य के अंक -

L +U+C+K=
12+21+3 +11 = *47% *, नियति तो एकदम सीमा (border) से गुजरती है।

कुछ लोग सोचते हैं कि अच्छा जीवन जीने के लिए * 'पैसा/MONEY * सबसे अच्छा है। तो अब

M+O+ N+E+Y कितने अंक?

13+15+14+ 5+ 25 = 72% पैसा पूरी तरह से सफलता नहीं दिलाता।

एक बड़े समुदाय का मानना है कि एक सफल व्यक्ति के पास 'नेतृत्व' होता है।

*'नेतृत्वगुण/LEADERSHIP * वाला अच्छा जीवन जीता है नेतृत्व के गुण =

L +E+A+D+E+R+ S+H+I+P
12+5+1+4+5+18+19+8+9+16=97%,

देखिये, नेता 100 प्रतिशत खुश, संतुष्ट, बिल्कुल खुश नहीं हैं।

तो और क्या है, जो व्यक्ति को 100% सुखी, संतुष्ट और सुखी बनाता है।

क्या आप किसी चीज की कल्पना कर सकते हैं?..... समझ में नहीं आ रहा?

दोस्तों यही तो खूबी है, जिंदगी की तरफ देखने का 'एटीट्यूड'।

आइए अब आपके चार्ट के अनुसार एटीट्यूड का स्कोर देखें...

A+T+T + I +T +U+D+E =
1+20+20+9+20+21+4+5 =100%

जीवन की सभी समस्याओं का समाधान और सुखी, संतुष्ट एवं प्रसन्न जीवन जिने का एक आसान तरीका है। अपनी जिंदगी को देखने का एक दृष्टिकोन अगर यह सकारात्मक होगा तो जीवन 100% सफल और खुशहाल होगा। इसलिए 'दृष्टिकोण बदलो, जीवन बदलेगा'

***

निष्पक्ष चुनाव

रवि आसुदानी
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

सूरज की किरणों सा हो उजाला,
हर कोने में सच्चाई का निवाला।
भारत भूमि पर हो ऐसा विधान,
निष्पक्ष चुनाव बनें सबकी पहचान।

ना धन-बल, ना छल-कपट हो,
हर वोटर का हृदय निर्मल हो।
जात-पात के भेद मिट जाएँ,
सच्चा लोकतंत्र हर दिल में आए।

नेताओं की हो ईमान की डगर,
विकास का सपना ले हर नगर।
जनता की आवाज का हो सम्मान,
हर वोट बने देश का स्वाभिमान।

चुनाव का पर्व पवित्र हो ऐसा,
जिसमें सच्चाई का हो बसेरा।
एक-एक वोट की हो असली कीमत,
न झुके कभी लोकतंत्र की हिम्मत।

आओ मिलकर हम सब कसम खाएँ,
सच की राह पर कदम बढ़ाएँ।
भारत की आत्मा को सजाएँ,
निष्पक्ष चुनाव से देश को महान बनाएं।

भारतीय लोकतंत्र की रीढ़

दिनेश राजेंद्र वाजपेयी
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (क्रय)

चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनता अपनी इच्छा और आकांक्षाओं को व्यक्त करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में निष्पक्ष चुनाव का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह न केवल लोकतंत्र की नींव को मजबूत करता है, बल्कि देश की एकता और अखंडता को भी बनाए रखता है। निष्पक्ष चुनाव का अर्थ है, ऐसा चुनाव प्रक्रिया जो पूरी तरह से स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी हो। इसमें किसी भी प्रकार का भेदभाव, धन-बल, या बाहुबल का प्रयोग न हो। यह केवल तभी संभव है जब चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने वाले सभी पक्ष, चाहे वह राजनीतिक दल हों, उम्मीदवार हों, या जनता हो, ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ कार्य करें।

निष्पक्ष चुनाव का महत्व :- भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहां की विविधता, विभिन्न भाषाएं, संस्कृतियां और जातीय समूह इस लोकतंत्र को और भी विशेष बनाते हैं। निष्पक्ष चुनाव जनता के विश्वास को बनाए रखने का सबसे सशक्त माध्यम है। अगर चुनाव निष्पक्ष नहीं होंगे, तो यह जनता के अधिकारों और लोकतंत्र की आत्मा के विरुद्ध होगा।

निष्पक्ष चुनाव से ही एक ऐसा नेतृत्व उभर कर आता है, जो समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य करता है। यह गरीबों और पिछड़े वर्गों को उनकी आवाज देने का एक माध्यम है। जब चुनाव प्रक्रिया निष्पक्ष होती है, तब जनता यह महसूस करती है कि उनके मत का महत्व है और उनका भविष्य उनके हाथों में है।

चुनौतियां :- भारत में निष्पक्ष चुनाव कराने की प्रक्रिया में कई चुनौतियां हैं। इनमें सबसे प्रमुख है धन-बल और बाहुबल का प्रयोग। कई बार चुनाव में उम्मीदवार पैसे का लालच देकर या डर का माहौल बनाकर वोट प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा, जातिवाद और सांप्रदायिकता भी चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, फर्जी मतदान और तकनीकी खामियां भी निष्पक्ष चुनाव में बाधा बनती हैं। सोशल मीडिया के इस युग में फेक न्यूज़ और अफवाहों का फैलाव भी एक बड़ी चुनौती है। इससे जनता के मन में भ्रम उत्पन्न होता है और उनकी निर्णय क्षमता प्रभावित होती है।

उपाय :- निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, चुनाव आयोग को और अधिक शक्तिशाली और स्वतंत्र बनाना चाहिए ताकि वह सभी चुनावी अनियमितताओं पर सख्त कार्रवाई कर सके। चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के लिए तकनीकी उपायों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जैसे ईवीएम और वीवीपैट का व्यापक उपयोग।

जनता को जागरूक करना भी बेहद आवश्यक है। मतदाताओं को यह समझना चाहिए कि उनका मत न केवल उनका अधिकार है, बल्कि यह उनके देश के भविष्य को तय करने का साधन भी है। इसके अलावा, राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को भी अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझनी चाहिए और चुनाव में ईमानदारी बनाए रखनी चाहिए।

******

(कालजयी रचना स्तंभ)

बड़े भाई साहब

- मुंशी प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बडे थे, लेकिन तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैने शुरू किया; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दीबाजी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन कि बुनियाद खूब मजबूत डालना चाहते थे जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने।

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा जन्मसिद्ध अधिकार था। और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ।

वह स्वभाव से बडे अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिडियों, कुत्तों, बल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थें। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुन्दर अक्षर से नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य! मसलन एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी स्पेशल, अमीना, भाईयों-भाईयों, दरअसल, भाई-भाई, राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ; लेकिन असफल रहा और उसने पूछने का साहस न हुआ। वह नवी जमात में थे, मैं पाँचवी में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुंह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंकरियां उछालता, कभी कागज की तितलियाँ उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया तो पूछना ही क्या! कभी चारदीवारी पर चढकर नीचे कूद रहे है, कभी फाटक पर चक्कर, उसे आगे- पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे है। लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल होता- 'कहाँ थे?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में पूछा जाता था और इसका जबाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मुंह से यह बात क्यों न निकलती कि जरा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिन्दगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ न आएगा। अँगरेजी पढ़ना कोई हंसी-खेल नहीं है कि जो चाहे

पढ़ ले, नहीं, ऐरागैरा नत्थू खैरा सभी अंगरेजी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखे फोडनी पडती है और खून जलाना पडता है, जब कही यह विधा आती है। और आती क्या है, हाँ, कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंगरेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, तुम अपनी आँखो से देखते हो, अगर नहीं देखते, जो यह तुम्हारी आँखो का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते है, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है, रोज ही क्रिकेट और हाकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहा हूँ, उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पडा रहता हूँ, फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गंवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो-ही-तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गंवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रूपये क्यों बरबाद करते हो?'

यह लताड़ सुनकर आंसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकडे-टुकडे जाते और हिम्मत छूट जाती। इस तरह जान तोडकर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता- क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिन्दगी खराब करूं। मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था; लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था। लेकिन घंटे-दो घंटे बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढूंगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए, बिना कोई स्किम तैयार किए काम कैसे शुरू करूं? टाइम-टेबिल में, खेल-कूद की मद बिलकुल उड़ जाती। प्रात: काल उठना, छ: बजे मुंह-हाथ धो, नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना। छ: से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढे तीन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घण्टा आराम, चार से पांच तक भूगोल, पांच से छ: तक ग्रामर, आधा घण्टा होस्टल के सामने टहलना, साढे छ: से सात तक अंग्रेजी कम्पोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिन्दी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम। मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन से उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के वह हलके-हलके झोके, फुटबाल की उछल-कूद, कबड्डी के वह दांव-घात, वाली-बाल की वह तेजी और फुरती मुझे अज्ञात और अनिर्वाय रूप से खीच ले जाती और वहां जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जान लेवा टाइम-टेबिल, वह आँख फोड पुस्तकें किसी की याद न रहती और फिर भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता। कमरे में इस तरह दबे पांव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच में भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुडकियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता।

सालाना इम्तहान हुआ। भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अन्तर रह गया। जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ। आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ। लेकिन वह इतने दु:खी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्माभिमान भी बढ़ा। भाई साहब का भरोसा मुझ पर न रहा। आजादी से खेल-कूद में शरीक होने लगा। दिल मजबूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फजीहत की,

तो साफ कह दूँगा- आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया। जबाव से यह हेकडी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ जाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक अब मुझ पर नहीं है। भाई साहब ने इसे भाँप लिया- उनकी सहज बुद्धि बडी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साइब ने मानो तलवार खीच ली और मुझ पर टूट पड़े -देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है, इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यो ही पढ़ गए? महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजों को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंगरेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेकों राष्ट्र अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते। बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थें। आग और पानी के देवता भी उसके दास थें; मगर उसका अंत क्या हुआ, घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू भर पानी देने वाला भी न बचा। आदमी जो कुकर्म चाहे करें; पर अभिमान न करे, इतराए नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया से गया।

शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अनुमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। अन्त में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख मांग-मांगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे बढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अन्धे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा चोट निशाना पड़ जाता है। उससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशान खाली न जाए।

मेरे फेल होने पर न जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतो पसीना आएगा। जब अलजबरा और जॉमेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पडेगा! बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुजरे हैं, कौन-सा कांड किस हेनरी के समय हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवां लिखा और सब नम्बर गायब! सफाचट। सर्फ भी न मिलेगा, सिफर भी! हो किस ख्याल में! दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोडियों चार्ल्स, दिमाग चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, तेयम, चहारम, पंचम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता और जामेट्री तो बस खुदा की पनाह! अब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नम्बर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अ ब ज और अ ज ब में क्या फर्क है और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो। दाल-भात-रोटी खायी या भात दाल-रोटी खायी, इसमें क्या रखा है; मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह! वह तो वही देखते है, जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लडके अक्षर-अक्षर रट डाले। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोडा है और आखिर इन बे-सिर पैर की बातों के पढ़ने से क्या फायदा?

इस रेखा पर वह लम्ब गिरा दो, तो आधार लम्ब से दुगना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से, लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफात याद करनी पड़ेगी। कह दिया- 'समय की पाबंदी' पर एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कापी सामने खोले, कलम हाथ में लिये, उसके नाम को रोइए।

कौन नहीं जानता कि समय की पाबन्दी बहुत अच्छी

बात है। इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके करोबार में उन्नति होती है; जरा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्ने में लिखने की जरूरत? मैं तो इसे हिमाकत समझता हूँ। यह तो समय की फिफायत नहीं, बल्कि उसका दुरूपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूंस दिया। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे और अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पडेंगे, चाहे जैसे लिखिए और पन्ने भी पूरे फुल्सकेप आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबन्दी पर संक्षेप में एक निबन्ध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक! संक्षेप में चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते। तेज भी दौडिए और धीरे-धीरे भी। है उल्टी बात या नही? बालक भी इतनी-सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज भी नहीं। उस पर दावा है कि मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो जमीन पर पांव नहीं रखते, इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे ज्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बांधिए, नहीं पछताएँगे। स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने, यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निस्स्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएं। भाई साहब ने अपने दरजे की पढाई का जो भयंकर चित्र खीचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया। कैसे स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरूचि ज्यो- कि-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी था, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में जलील न होना पड़ें। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरो का-सा जीवन कटने लगा।

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत न की पर न जाने, कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया था। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गये थे; दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उभर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने वाली खुशी आधी हो गई। मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले?

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अन्तर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कही भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डांटते हैं। मुझे उस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनानद पास होता जाता हूँ और इतने अच्छे नम्बरों से।

अबकी भाई साहब बहुत-कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डांटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डांटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा; या रहा तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं तो पास ही हो जाऊँगा, पढू या न पढूं मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोडा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी ही की भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बांधना,

पतंग टूर्नामेंट की तैयारियां आदि समस्याएँ अब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नजरों से कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखे आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की एक पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बांस लिये उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारे है, न ट्राम, न गाडियाँ। सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं मेरा हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गये हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए। एक जमाना था कि लोग आठवां दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थें। मैं कितने ही मिडलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट है। कितने ही आठवीं जमात वाले हमारे लीडर और समाचार-पत्रों के सम्पादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाजारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कमअकली पर दुःख होता है। तुम जहीन हो, इसमें शक नहीं: लेकिन वह जेहन किस काम का, जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले? तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज एक दर्जा नीचे हूँ और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं है; लेकिन यह तुम्हारी गलती है। मैं तुमसे पांच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद तुम मुझसे आगे निकल जाओ-लेकिन मुझमें और तुजमें जो पांच साल का अन्तर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नही मिटा सकता। मैं तुमसे पांच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूंगा। मुझे दुनिया का और जिन्दगी का जो तजरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए., डी.फिल. और डी. लिट. ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढने से नहीं आती है। हमारी अम्मा ने कोई दरजा पास नहीं किया, और दादा भी शायद पांचवी जमात के आगे नहीं गये, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विधा पढ लें, अम्मा और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता है, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा जतरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस जरह कि राज्य व्यवस्था है और आठवें हेनरी ने कितने विवाह किये और आकाश में कितने नक्षत्र है, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हो, लेकिन हजारों ऐसी बाते है, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है।

दैव न करें, आज मैं बीमार हो आऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पांव फूल जाएंगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हे और कुछ न सूझेंगा; लेकिन तुम्हारी जगह पर दादा हो, तो किसी को तार न दें, न घबराएं, न बदहवास हों। पहले खुद मरज पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलायेंगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का महीने-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते है, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते है और पैसे-पैसे को मोहताज हो जाते है। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं; लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुम्ब का पालन किया है, जिसमे सब मिलाकर नौ आदमी थें। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए. हैं कि नहीं और यहाँ के एम.ए.नहीं, ऑक्सफोर्ड के एक हजार रूपये पाते है, लेकिन उनके घर इंतजाम कौन करता है? उनकी बूढी मां। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई। पहले खुद घर

का इंतजाम करते थें। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्जदार रहते थें। जब से उनकी माताजी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। तो भाईजान, यह जरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह नहीं चल पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे, तो मैं (थप्पड दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूं। मैं जानता हूं, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही है।

मैं उनकी इस नई युक्ति से नतमस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आंखों से कहा- हरगिज नहीं। आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले लगा लिया और कहाँ कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा जी भी ललचाता है, लेकिन क्या करूँ, खुद बेराह चलूं तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर पर है। संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा हॉस्टल की तरफ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

******

नारी शक्ति का जागरण

- दिलीप जायभाये
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (क्रय)

नारी है सृष्टि की जननी, जीवन का आधार,
उसके बिना अधूरा हर घर, हर संसार।
उसके हाथों में बसी है सृजन की लय,
नारी के बिना न बनेगी उजाले की राह।

भूले हैं जो उसका मोल, उसके अस्तित्व का मान,
समाज को जगाना होगा, बढ़ाना होगा सम्मान।
पिंजरे में कैद नहीं अब, वह उड़ान चाहती है,
अपने हर सपने को सच कर दिखाना चाहती है।
पढ़ाई, कलम और निर्णय का उसे हक दो,
उसके लिए समर्पित हों सभी अवसर और रस्ते जो।
न केवल घर का दायरा, वह ब्रह्मांड की रानी है,
हर क्षेत्र में उसकी उपस्थिति, अब समय की कहानी है।

हर बेटी को दो शिक्षा, हर बहन को समर्थन,
नारी है शक्ति का प्रतीक, उसका करो अभिनंदन।
उसके साथ खड़े हो सब और आवाज को बुलंद करो,
समानता का सपना सच करने का संकल्प करो।

क्योंकि जब नारी सशक्त होगी, दुनिया बेहतर बनेगी,
हर एक चुनौती के आगे, नारी साहस से लड़ेगी।
नारी का जागरण है भविष्य का प्रकाश,
उसकी शक्ति से होगा हर सपना खास।

गतिविधियाँ

आईएसपी के संयुक्त तत्वावधान में नराकास, नासिक की बैठक

आईएसपी राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। इसी कड़ी में नराकास, नासिक की वर्ष 2024 की पहली छमाही की राजभाषा समीक्षा बैठक नराकास, नासिक और आईएसपी के संयुक्त तत्वावधान में 26 जून, 2024 को एसपीएमसीआईएल निगम अनुसंधान एवं विकास केंद्र, नासिक के प्रांगण में आयोजित किया गया जिसमें नराकास अध्यक्ष सहित सदस्य कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित हुए। इस बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का पुरस्कार भी वितरित किया गया जिसमें आईएसपी, नासिक को वर्ष 2022- 2023 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

एसपीएमसीआईएल अंतर-इकाई बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन

एसपीएमसीआईएल निगम मुख्यालय के निर्देशों के अनुसार भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 18 से 20 जनवरी 2024 की अवधि में आपले स्टेडियम, नासिक में अंतर-इकाई बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। निगम मुख्यालय से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (मानव संसाधन), निदेशक (वित्त), मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा भाप्रमु और चपमु के मुख्य महाप्रबंधक महोदय के करकमलों द्वारा इसका शुभारंभ निगम मुख्यालय सहित नौ इकाईयों के पदाधिकारियों / खिलाड़ियों की उपस्थिति के बीच किया गया। एसपीएमसीआईएल निगम मुख्यालय सहित 9 इकाईयों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था।

एसपीएमसीआईएल अंतर-इकाई बैडमिंटन प्रतियोगिता में बैंक नोट मुद्रणालय, देवास विजेता और भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक उप विजेता रहें।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक द्वारा यह आयोजन बहुत सफल रहा तथा सभी ने इस आयोजन के व्यवस्था की बहुत सराहना की।

एसपीएमसीआईएल का 19 वां स्थापना दिवस

15 फरवरी, 2024 को एसपीएमसीआईएल का 19वां स्थापना दिवस मनाया गया। माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने नई दिल्ली में वर्चुअल माध्यम से इस 19 वें स्थापना दिवस समारोह की अध्यक्षता की। भारत सरकार के वित्त सचिव श्री अजय सेठ, एसपीएमसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विजय रंजन सिंह, एसपीएमसीआईएल बोर्ड निदेशकों, एसपीएमसीआईएल की सभी नौ इकाईयों के मुख्य महाप्रबंधक और अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

श्री विजय रंजन सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कंपनी की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को साझा किया। एसपीएमसीआईएल की विभिन्न इकाईयों के मुख्य महाप्रबंधक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से इस कार्यक्रम में भाग लिया। निगम मुख्यालय और इकाईयों के मुख्य महाप्रबंधकों ने उनके इकाईयों के कर्मचारियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत किया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के अनुसंधान और विकास केंद्र में हुई इस वर्चुअल मीटिंग के दौरान श्री राजेश बंसल, मुख्य महाप्रबंधक, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय द्वारा निम्नलिखित तीन कर्मचारियों को उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए गौरन्वावित किया गया।

1. श्री चंद्रशेखर कुंवरलाल पटले, वरिष्ठ पर्यवेक्षक।
2. श्री सदाशिव सुखदेव जाधव, कनिष्ठ पडतालक।
3. श्री संतोष भास्कर गोरे, वरिष्ठ प्रचालक।

इस अवसर पर एसपीएमसीआईएल की अन्य इकाईयों को उत्पादकता, ऊर्जा संरक्षण, राजभाषा, पर्यावरण और सुरक्षा जैसी गतिविधियों में पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ इस प्रकार हैं :-

आईएसपी सीएमडी कप से सम्मानित

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड को एसपीएमसीआईएल के 19वें स्थापना दिवस के अवसर पर भारत सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण, भारत सरकार के वित्त सचिव श्री अजय सेठ, एसपीएमसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विजय रंजन सिंह, एसपीएमसीआईएल बोर्ड निदेशकों तथा एसपीएमसीआईएल की सभी नौ इकाईयों के मुख्य महाप्रबंधक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में उत्पादकता, ऊर्जा संरक्षण, राजभाषा, पर्यावरण और सुरक्षा गतिविधियों में ऑलराउंड सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सीएमडी कप से सम्मानित किया गया।

जन्मदिवस शुभकामनाएँ

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में प्रत्येक कर्मचारी के जन्मदिवस पर मुख्य महाप्रबंधक, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय द्वारा प्रमाणपत्र एवं बधाई देकर उस कर्मचारी का सम्मान किया जाता है। ऐसे ही एक कर्मचारी को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल।

स्वतंत्रता दिवस 2024

आईएसपी में 15 अगस्त 2024 को बहुत हर्ष उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान आईएसपी के मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल ने राष्ट्रीय ध्वज को सीआईएसएफ जवानों की उपस्थिति में फहराया और राष्ट्रगान के साथ सलामी दी। इस अवसर पर आईएसपी यूएस जिमखाना हॉल में कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें आईएसपी के लगभग 155 कर्मचारियों को उनके कर्तव्य परायणता और कार्य निष्ठा के लिए मुख्य महाप्रबंधक द्वारा सम्मानित किया गया।

सीएसआर के तहत कचरा संग्रहण वाहन का वितरण

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय की सीएसआर परियोजना के अंतर्गत जिला परिषद, नासिक के माध्यम से 08 फरवरी, 2024 को नासिक के ग्रामीण क्षेत्रों में कचरा संग्रहण वाहनों का वितरण समारोह भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक के जिमखाना मैदान में आयोजित किया गया था। श्री राजेश बंसल, मुख्य महाप्रबंधक, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक ने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलीटी (CSR) पहल 2023-24 के तहत नासिक के ग्रामिण क्षेत्रों में कचरा संग्रहण हेतु इन वाहनों को जिला परिषद, नासिक को सौंपा।

वित्तीय वर्ष 2023-24 में नासिक के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के लिए जिला परिषद नासिक को 12 कचरा संग्रहण वाहनों उपलब्ध कराने का सीएसआर प्रस्ताव रखा गया था। भारत प्रतिभूति मुद्रणालय द्वारा नासिक जिले के छह गांवों में कचरा संग्रहण वाहन उपलब्ध कराने के लिए लगभग रु. 86,24,232/- की लागत से सीएसआर परियोजना शुरू की गई थी।

जिला परिषद नासिक की सिफारिश के अनुसार, 12 गांवों (यानी गिरनारे, गोवर्धन, लहावित, संसारी, सामनगांव, पिंपरी-सैय्यद, लाखलगांव, पलसे, शिंदे, जाखोरी, कोटमगांव, शेवागेदारना) को चुना गया, जहाँ कचरा संग्रहण की कोई सुविधा नहीं थी। इसलिए स्वच्छ भारत अभियान के तहत आईएसपी ने इन गांवों में स्वच्छता के लिए वाहन उपलब्ध कराए। आईएसपी द्वारा जेईएम पोर्टल के माध्यम से 12 कचरा टिपर्स की खरीद की गई। मुख्य महाप्रबंधक, आईएसपी द्वारा दिनांक 08.02.2024 को वाहनों को जिला परिषद नासिक को सौंप दिया गया। इस कार्यक्रम के लिए भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के कार्यपालक, स्टाफ एव कामगार बडी संख्या में उपस्थित थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम : गुणवत्ता क्षमता

आईएसपी नासिक द्वारा दिनांक 24.07.2024 को दत्तोपंत थेंगडी नेशनल बोर्ड फॉर वर्कर्स एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, नासिक के माध्यम से आईएसपी ट्रेनिंग हॉल में ''गुणवत्ता क्षमता'' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। उक्त प्रशिक्षण में 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया और प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

सीसीएस पेंशन नियम 1972 एवं 2021 पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्री वी.आर. रमनकुट्टी आईसीएएस, संकाय (सेवानिवृत्त, सरकारी लेखा एवं वित्त संस्थान) द्वारा 25 और 26 जुलाई, 2024 को 'सीसीएस पेंशन नियम 1972 और 2021' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। उक्त प्रशिक्षण में मानव संसाधन, वित्त और पीएओ अनुभाग, आईएसपी से कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

'5एस' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दत्तोपंत थेंगडी नेशनल बोर्ड फॉर वर्कर्स एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, नासिक द्वारा 24.09.2024 को आईएसपी प्रशिक्षण हॉल में आईएसपी कर्मचारियों के लिए '5एस' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में, 28 प्रतिभागियों (अर्थात अधिकारी, पर्यवेक्षक और कार्यकर्ता) ने भाग लिया और प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

सर्विस बुक, एलटीसी एवं आरक्षण एवं रोस्टर से संबंधित मामले पर प्रशिक्षण

श्री वी. आर. रमनकुट्टी, आईसीएएस, संकाय (सेवानिवृत्त, सरकारी लेखा एवं वित्त संस्थान) द्वारा 26 और 27 सितंबर, 2024 को आईएसपी प्रशिक्षण हॉल में 'सेवा पुस्तिका, एलटीसी और आरक्षण और रोस्टर से संबंधित मामलों' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया था।

उक्त प्रशिक्षण में 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

'नैतिकता और सुशासन' पर वक्तव्य

सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2024 की प्रस्तावना के रुप में, क्षमता निर्माण कार्यक्रम के क्षेत्र के साथ निवारक सतर्कता पर तीन महीने के अभियान के दौरान दिनांक 11.09.2024 को आईएसपी और सीएनपी अधिकारियों के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'नैतिकता और शासन' पर एक वक्तव्य सत्र आयोजित किया गया है, जिसमें ब्रेथवेट एंड कंपनी लिमिटेड के पूर्व सीएमडी श्री यतीश कुमार को अतिथि वक्ता के रुप में आमंत्रित किया गया था। श्री यतीश कुमार ने कार्य प्रणाली में नैतिक और पारदर्शी मनोभाव के माध्यम से सुशासन के अपने निजी अनुभवों के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

एसपीएमसीआईएल प्रोक्योरमेंट कॉन्क्लेव, 2024 का आयोजन

एसपीएमसीआईएल निगम मुख्यालय के तत्वावधान में आईएसपी, नासिक ने दिनांक 2 और 3 सितंबर 2024 को एसपीएमसीआईएल प्रोक्योरमेंट कॉन्क्लेव, 2024 का बेहद सफल कार्यक्रम आयोजित किया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में सार्वजनिक खरीद के उभरते परिदृश्य पर चर्चा करने के लिए देश भर के विशेषज्ञ एक साथ आए।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री विजय रंजन सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एसपीएमसीआईएल, श्री विनय कुमार सिंह, सीवीओ, एसपीएमसीआईएल, श्री संजय अग्रवाल, सलाहकार, पीपीडी, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, श्री अशोक कुमार, मुख्य तकनीकी परीक्षक, केंद्रीय सतर्कता आयोग, भारत सरकार, श्री एच.के शर्मा, सेवानिवृत अपर अतिरिक्त महानिदेशक, डीजीएसडी, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, श्री आर. के. श्रीवास्तव, अपर सीईओ, जेम, डॉ. सुनील नन्दनकर, वरिष्ठ प्रोफेसर, भारतीय रेलवे राष्ट्रीय अकादमी, बड़ोदरा, श्री विशाल सिंह, निदेशक, जेईएम, श्री राजेश बंसल, मुख्य महाप्रबंधक, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय नासिक, डॉ. डीके रथ, महाप्रबंधक एवं विभाग प्रमुख, चलार्थ पत्र मुद्रणालय नासिक और श्री अभिनव भारत, प्रबन्धक, जीईएम की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। एसपीएमसीआईएल प्रोक्योरमेंट कॉन्क्लेव में उपस्थित राष्ट्रीय स्तर के वक्ताओं ने सार्वजनिक खरीद के क्षेत्र में समसामयिक एवं प्रासंगिक परिवर्तनों से उपस्थित अधिकारियों को अवगत कराया। इस कार्यकम के माध्यम से एसपीएमसीआईएल ने सार्वजनिक खरीद के क्षेत्र में पारदर्शिता बनाए रखने के लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ रुप से प्रकट किया। साथ ही इस कॉन्क्लेव के माध्यम से कौशल विकास, प्रणालीगत सुधार और टिकाऊ खरीद प्रथाओं के प्रति निगम के समर्पण पर जोर दिया गया।

स्वच्छता ही सेवा (एस एच एस) अभियान

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक में स्वच्छता ही सेवा (एस एच एस) अभियान के अंतर्गत भाप्रमु परिसर मे दिनांक 21.09.2024 को साफ सफाई कार्य करते हुए श्रम दान किया गया। इस स्वच्छता अभियान मे सभी कार्यपालकों, कर्मचारियों, मान्यता प्राप्त यूनियनों के प्रतिनिधियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस दौरान भारत प्रतिभूति मुद्रणालय कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे की निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं घोष वाक्य प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था।

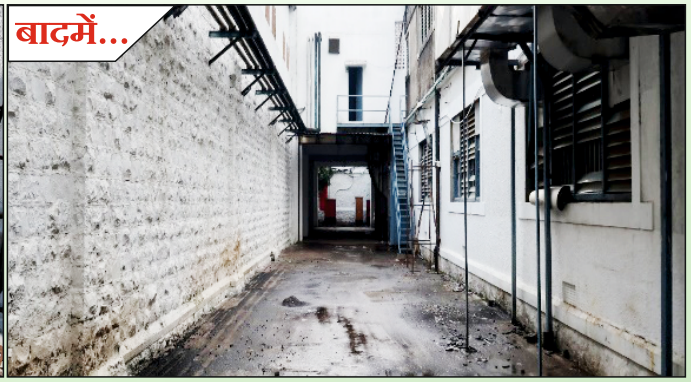

बुनियादी स्वास्थ्य जांच

आईएसपी, नासिक में कर्मचारियों और सीआईएसएफ कर्मियों की बुनियादी चिकित्सा जांच का आयोजन 23 और 24 सितंबर, 2024 को किया गया। बुनियादी स्वास्थ्य जांच अशोका मेडिकवर हॉस्पिटल्स, नासिक के माध्यम से कराया गया।

'अनुशासनात्मक कार्यवाही और आईओ/पीओ की भूमिका'पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय द्वारा आईएसपी/सीएनपी और सीबीएसआई अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 25.09.2024 को 'अनुशासनात्मक कार्यवाही और आईओ/पीओ की भूमिका' पर एसपीएमसीआईएल अनुसंधान और विकास केंद्र, नासिक सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री वीआर रमनकुट्टी, सेवानिवृत आईसीएएस ने इस विषय पर उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया।

नेत्र जांच शिविर

कर्मचारियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने की प्रतिबद्धता के दृष्टिकोण से इकाई में आईएसपी के सभी कर्मचारियों और सीआईएसएफ जवानों के लिए दिनांक 12 से 17 अगस्त, 2024 तक नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह जांच एएसजी नेत्र अस्पताल, नासिक के माध्यम से कराया गया।

साइबर सुरक्षा एवं स्वच्छता पर जागरुकता सत्र

सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आईएसपी, नासिक में दिनांक 28.09.2024 को साइबर सुरक्षा एवं स्वच्छता पर एक जागरुकता सत्र आयोजित किया गया।

यह सत्र साइबर सुरक्षा सेल- नासिक डिविजन, महाराष्ट्र पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिया गया। इस दौरान अधिकारियों को साइबर सुरक्षा से संबंधित केस स्टडी के माध्यम से जागरुक किया गया।

'एक पेड़ माँ के नाम' थीम पर पौधा रोपण कार्यक्रम

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में राष्ट्रव्यापी 'एक पेड़ माँ के नाम' पहल के रुप में तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए दिनांक 10.10.2024 को आईएसपी नासिक में पौधा रोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल ने पौधारोपण करते हुए इस कार्यक्रम की शुरुवात की। तत्पश्चात अन्य अधिकारियों ने भी पौधा रोपण किया।

सरकारी ई मार्केटप्लेस (जीईएम) पर व्याख्यान

सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2024 के दौरान क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत सरकारी ई मार्केटप्लेस (जीईएम) पर इन-हाउस व्याख्यान दिनांक 09.10.2024 को आयोजित किया गया था। इस व्याख्यान के माध्यम से श्री इम्तियाज खान, प्रबंधक (सामग्री) ने आईएसपी के नव नियुक्त अधिकारियों को संबोधित किया और उन्हें जीईएम के माध्यम से खरीद प्रक्रिया की जानकारी, पालन किए जाने वाले विभिन्न खंड और नियम, जीईएम के माध्यम से बोलियों के प्रकार आदि से अवगत कराया।

'स्तन कैंसर जागरुकता सत्र' और 'चिकित्सा जांच शिविर

अक्टूबर, 2024 माह 'स्तन कैंसर जागरुकता माह' के रुप में मनाया जाता है। इस अवसर पर आईएसपी नासिक ने एचसीजी मानवता कैंसर अस्पताल के सहयोग से 7 और 8 अक्टूबर, 2024 को महिला कर्मचारियों के लिए 'स्तन कैंसर जागरुकता सत्र' और 'चिकित्सा जांच शिविर' का आयोजन किया।

जागरुकता सत्र डॉ. निष्ठा द्वारा दिया गया और इसमें प्रमुख रुप से स्तन कैंसर के लक्षण, इसकी शीघ्र पहचान, इसे रोकने के उपाय और स्तन कैंसर के रोगियों के लिए उपलब्ध उपचार शामिल थे।

मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम

मनुष्य के सर्वांगिक विकास के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस दृष्टिकोण से आईएसपी नासिक ने आईएसपी/सीएनपी के कर्मचारियों के लिए ईशा फाउंडेशन के सहयोग से दिनांक 10.10.2024 को मानसिक स्वास्थ्य पर एक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सत्र में ईशा फाउंडेशन से पधारे योग प्रशिक्षक ने ध्यान एवं योग के माध्यम से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर विस्तार से प्रकाश डाला और उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 15 मिनट का निर्देशित ध्यान कराया। यह कार्यक्रम बहुत सार्थक एवं सफल रहा।

'संरक्षा जागरुकता' पर प्रशिक्षण सत्र

आईएसपी नासिक एक औद्योगिक संस्थान है जिसमें कर्मचारी मशीनों पर कार्य करते हैं। इस दृष्टिकोण से संरक्षा एक अति महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय पर कर्मचारियों को जागरुक बनाए रखने के विचार से आईएसपी नासिक में दिनांक 22.10.2024 को दत्तोपंत ठेंगड़ी नेशनल बोर्ड फॉर वर्कर्स एजुकेशन एंड डेवलपमेंट के सहयोग से 'संरक्षा जागरुकता पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कारखाना परिसर में संरक्षा के महत्व को बताना और इसे कार्य वातावरण का एक अभिन्न अंग बनाना था।

एक्यूप्रेशर सुजोक थेरेपी

आईएसपी नासिक कर्मचारियों के स्वास्थ्य को लेकर पूर्ण रुप से प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता के कारण ही यहाँ विभिन्न अवसरों पर कर्मचारियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए जांच चिकित्सा व्यवस्था की जाती है। इसी क्रम में आईएसपी में दिनांक 14.10.2024 को एक्यूप्रेशर सुजोक थेरेपी शिविर का आयोजन किया गया जो कर्मचारियों के लिए बेहद लाभकारी सिद्ध हुआ।

सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के लिए वित्त प्रबंधन पर सत्र

वित्त प्रबंधन का महत्व सभी आयु वाले व्यक्तियों के लिए अहम मानी जाती है परंतु सेवानिवृत होने पर वित्त प्रबंधन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आय के स्त्रोत बंद हो जाने या सीमिति आय होने की अवस्था पर वित्त का प्रबंधन व्यक्ति के निजी जीवन की प्रसन्नता को बहुत हद तक प्रभावित करती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए आईएसपी के सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों के लिए दिनांक 23.10.2024 को वित्त प्रबंधन पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। एसबीआई के अधिकारियों ने आईएसपी के सेवानिवृत होने वाले कर्मचारियों को वित्त निवेश और उसके उचित प्रबंधन पर मार्गदर्शन प्रदान किया।